SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:53, Issue: 4
September-2022, Price Rs.20/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

सितंबर-2022

रु.20/-

27-09-2022
मंगलवार
ध्वजारोहण

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2022 सितंबर 27 से अक्तूबर 05 तक

सप्तगिरि पाठकों के लिए सूचना

'सप्तगिरि' एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है। सप्तगिरि के लिए आपका प्रेम अद्वितीय और असाधारण है। 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के और पाठकों के बीच एक पुल के जैसा काम कर रही हैं।

सप्तगिरि पत्रिका के दाम में परिवर्तन हुआ है।

स्वामी के आगमन की अनुभूति अपने ही घर में पाइए।

सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के लिए चंदा भर कर...

श्रीहरि का अक्षर प्रसाद हर महीने स्वीकार कीजिए।

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

(हिन्दी, तमिल, कन्नड, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।)

चंदा का विवरण

एक प्रति - रु.20/-

वार्षिक चंदा - रु.240/-

जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) - रु.2,400/-

विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा - रु.1,030/-

दाम में परिवर्तन सितंबर - 2022 महीने से लागू हो गया है।
नये चंदादार पर ही ये परिवर्तन लागू होगा।

अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति - 517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।
दूरभाषा - 0877-2264363, 2264543.

यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-३८)

यद्यपि लोभ से भ्रष्ट चित्त हुए ये लोग कुल के नाश से उत्पन्न दोष को और मित्रों से विरोध करने से उत्पन्न पाप को देखने में असमर्थ हैं।

आध्यायार्थं च पादं वा नित्यं यः पठते जनः।
प्राप्नोति रविलोकं स मन्वन्तर समाः शतम्॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

इसी प्रकार जो मनुष्य हर दिन गीता के आधे अध्याय या गीता के चौथे अध्याय का पाठ करेगा वह एक सौ मन्वंतर तक सूर्यलोक में वास करेगा।

एस.वी.गोसंरक्षण न्यास

गायों का संरक्षण, उसके द्वारा उपलब्ध आध्यात्मिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए सन् १९५६ में ति.ति.दे. ने गोसंरक्षण शाला और सन् २००२ में एस.वी.गोसंरक्षण न्यास को आरंभ किया है। दाताओं से विनती है कि इस न्यास को उदारतापूर्वक धनराशि दान में दें और गोशाला में रहनेवाले गऊओं के पालन-पोषण में अपना सहयोग दें। आयकर कानून के विभाग ८० (जी) के अनुसार आप आयकर से छूट प्राप्त कर सकते हैं।

दाता धनराशि को किसी भी राष्ट्रीय बैंक में 'एग्जिक्यूटिव अफ़सर, टी.टी.डी, तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट या चेक के रूप में भेज सकते हैं।

कृपया मांगड्राफ्ट या चेक इस पते पर भेजें-

द डायरेक्टर, एस.वी.गोसंरक्षण न्यास,
एस.वी.डैयरी फार्म, चन्द्रगिरि रोड,
ति.ति.दे.तिरुपति-५१७५०२.

दूरभाष: ०८७७-२२७७७७७.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५३ सितंबर-२०२२ अंक-०४

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मा रेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

विषयसूची

तिरुमल ब्रह्मोत्सवों की परंपरा	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	07
वामनावतार और उसका वैशिष्ट्य	श्रीमती पी.सुजाता	13
सूर्यप्रभावाहन	डॉ.बी.के.माधवी	18
चंद्रप्रभावाहन	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	22
जीयंगार व्यवस्था का आविर्भाव	श्रीमती सुधा रंगराजन	25
भगवान श्री वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए उपयुक्त सांप्रदायिक वस्त्र	डॉ.जी.मोहन नायुडु	31
'श्रीवारि सेवा' - अनंत आनंद के लिए गंतव्य	श्रीमती सी.मंजुला	34
श्री अनंत पद्मनाभ स्वामी व्रत	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	39
अलिपिरि - तिरुमल पैदल यात्रा का महत्व	डॉ.लक्ष्मणाचार्य मरिंगंटि	43
वकुला माता	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	46
सितंबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	49
चित्रकथा - भक्ति का महत्व	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज		52

सूचना

इस अंक में धारावाहिक लेखों का प्रचुरण नहीं किया जा रहा है।

- प्रधान संपादक

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - तिरुमल में ध्वजारोहण।
चौथा कवर पृष्ठ - तिरुमल में महाशेषवाहन।

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

सप्तगिरीश्वर की सेवा में 'सप्तगिरि'

फूलों की सार्थकता भगवान को समर्पित होने पर... 'सप्तगिरि' पत्रिका के अक्षर पुष्पों की सार्थकता भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी को अर्पित होकर भक्तों के पास प्रसाद के रूप में पहुँचने पर। अक्षर पुष्पों से सदा देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर की अक्षरार्चना करके प्रसाद के रूप में 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका ति.ति.दे. के सहयोग और वित्तीय सहायता से पहुँचायी जा रही है। इस पत्रिका की प्रगति और प्रचार में ति.ति.दे. के अधिकारियों की कर्मठता और सेवाभाव के साथ-साथ अतुलनीय पाठक गण के प्रेम और श्रद्धापूर्ण सहयोग प्राप्त होते रहे हैं। इस के लिए 'सप्तगिरि' परिवार पाठकगण के प्रति नतमस्तक होकर आभार प्रकट करता है। 'सप्तगिरि' पत्रिका के और सुचारु आबंटन और प्रस्तुतीकरण के लिए इस आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की अभी इस महीने से कीमत बढाने की अनिवार्यता और विवशता हो चली है। परम आदरणीय पाठकगण इस विवशता पूर्ण प्रार्थना का यथा प्रेम और सौहार्द के साथ स्वागत करेंगे, ऐसा पूरा विश्वास है। कागज के दाम, मुद्रण-क्रिया, कीमती चित्रों का मुद्रण आदि का निरंतर भार बढ रहा है। देवस्थान के अधिकारीगण ने इस पर गंभीरता से विचार करके और पाठक-स्नेह की सीमाओं का ध्यान रखते हुए यथासंभव स्वल्प रूप से दाम बढाकर व्यय की थोडी क्षतिपूर्ति करने का निर्णय लिया है। आगे इस मासिक पत्रिका की एक प्रति रु. 20/-, वार्षिक चंदा रु. 240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष मात्र के लिए) रु. 2,400/-, विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/- कीमत रखने का निर्णय लिया गया है।

पाठकगण से यह भी सविनय निवेदन है कि लगभग बीस सालों से पत्रिका का मूल्य नहीं बढ़ाया गया है। वित्तीय संकट के समय भी भार को ति.ति.दे. ने ही उठाया है। परंतु आज पत्रिका का मुद्रण करना ति.ति.दे. के लिए अधिक भार हो गया है। अतः अनिवार्यरूप से पत्रिका के दाम को बढ़ाने का निर्णय लिया है। आदरणीय पाठकगण इसे दृष्टि में रखकर पूर्व की तरह 'सप्तगिरि' पत्रिका का समादर करेंगे, ऐसा विनम्र निवेदन है।

कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर के ब्रह्मोत्सव

भक्तवत्सल, आर्तत्राण परायण, अलंकार प्रिय भगवान श्री बालाजी के सालकट्ल वार्षिक ब्रह्मोत्सवों का शुभारंभ आगामी कुछ दिनों में हो रहा है। भगवान बालाजी की नित्य, साप्ताहिक, मासिक, पक्षोत्सवों के रूप में कितनी भी पूजाएँ संपन्न होने पर भी 'वार्षिक ब्रह्मोत्सव' के वे समतुल्य नहीं हैं। इन ब्रह्मोत्सवों के अवसर पर श्री स्वामीजी विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर तिरुमाडावीथियों में शोभायात्रा करते हुए भक्तजनों को दर्शन देकर उन्हें अनगिनत आशीष देते हैं। इन ब्रह्मोत्सवों का मुख्य कारक सृष्टिकर्ता ब्रह्म हैं। वे अपने पिता, श्री महाविष्णु की अनुमति से इन उत्सवों का आयोजन किया है। वे आज भी संपन्न किया जा रहा है। इस दौरान वैखानस आगम के अनुसार ध्वजारोहण से लेकर ध्वजावरोहण तक प्रत्येक पूजा शास्त्रोक्त रूप से संपन्न की जाती है।

इन ब्रह्मोत्सवों के महापर्व में सभी भक्तगण भाग लेकर भगवान जी के आशीष पाकर, आयुरारोग्य एवं ऐश्वर्यों को प्राप्त करते हैं। जीवन में सुख-शांति और समृद्धि की प्राप्ति के लिए सभी भक्तगण को इन ब्रह्मोत्सवों में भाग लेने का हार्दिक स्वागत करते हैं।

तिरुमल ब्रह्मोत्सवों की परंपरा

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण
मोबाइल - 9441254061

तिरुमल-तिरुपति महाक्षेत्र भारत भर में वैष्णव पुण्य स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। तिरुपति महानगर पुराण- प्रसिद्ध नगरी भी है। अति पुरातन यह नगरी अनेकों दिव्य-महिमाओं का पवित्र-स्थल है। तिरुपति ग्यारहवीं शताब्दी के यतीन्द्र भगवद्रामानुजाचार्यजी के द्वारा बसाया गया था। तिरुमल कलियुग वैकुंठ शेषाचल पर्वतों में बसा है तो तिरुपति श्री वेंकटेश्वर स्वामी के श्रीचरणों में शेषाचल पर्वत के नीचे बसा हुआ नगर है। भगवद्रामानुज भाष्यकार के रूप में वैष्णव-आचार्यों में विख्यात हुए हैं। इन्हीं महानुभाव ने तिरुपति क्षेत्र में ''श्री गोविन्दराजस्वामी'' के मंदिर का निर्माण करवाया था। श्री गोविन्दराजस्वामी तिरुमल श्री वेंकटेश्वर के बड़ा भाई समझे जाते है।

और, तिरुमल दिव्यधाम तो साक्षात वैकुंठ धाम माना जाता है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी अनाथ कलियुग के नाथ माने जाते हैं, जो सातों पहाडों के शिरोमणि शेषाचल गिरियों पर विराजमान होकर, समूचे विश्व की देख-रेख कर रहे हैं।

यह श्री वेंकटेश्वरस्वामी के भक्तों का प्रगाढ विश्वास रहा है कि ब्रह्म, इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर आदि प्रमुख

देवगण, कलियुग वैकुंठ दिव्य धाम तिरुमल पुण्यक्षेत्र पर विराजमान होकर भक्तों के नील-मणि बन कर उपस्थित बालाजी भगवान की सहायता करते हुए कलियुग को कलिपुरुष के प्रभाव से मुक्त कर रक्षा करते हुए पार करा रहे हैं।

श्री वेंकटेश भगवान का वैभव

तिरुमल श्री बालाजी भगवान का वैभव वर्णनातीत है। दिन-दिन के उत्सव, वारोत्सव, पक्षोत्सव, मासोत्सव तथा वार्षिक उत्सवों से श्रीस्वामी के उत्सवों का वर्णन न करते बनता है। श्री वेंकटेश्वरस्वामी अलंकार प्रिय हैं। साथ ही साथ वे उत्सवों का भी प्रिय हैं।

भगवान श्री वेंकटेश्वर के ससुर ''आकाश राज'' का छोटा भाई था ''राजा तोंडमान्।'' राजा तोंडमान् तिरुवेंगडम् (तिरुपति दिव्यक्षेत्र के आस-पास का प्रांत) का सम्राट् था, जिसने इतिहास की गति में कई युद्ध करके विजय हासिल की।

इस राजा तोंडमान् ने स्वयं संचालन करके युवरानी ''पद्मावती'' से श्रीनिवास का परिणय कराया था, क्योंकि राजा तोंडमान नील-मणि की तरह स्वयं प्रकाशित श्रीनिवास सम्राट् से बेहद प्रेम करता था, जो अलौकिक दिव्य सुन्दर पुरुष थे।

आकाशराज के आतिथ्य में श्रीनिवास और पद्मावती के विवाहोपरांत अगस्थ्य महामुनि की सलाह पर, क्यों कि आंध्रा में विवाह के बाद तुरंत पहाडी-यात्रा निषेद है, श्रीनिवासमंगापुरम् में बसे। जहाँ उनकी याद में राजा-तोंडमान् चक्रवर्ति ने श्रीनिवास के लिए मंदिर बनाया। वर्तमान में इसे श्रीनिवासमंगापुरम् कहा जाता है। यहाँ के स्वामी को 'कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी' कहते हैं। विवाह की कामना करने वाले युवती-युवकों के लिए यहाँ विशेष कल्याण व्रत भी इसीलिए कराया जाता है।

विवाहोपरांत श्रीनिवासमंगापुरम् में वास श्रीनिवास भगवान को तिरुमलगिरियों में तपस्या करनेवाले ऋषि मुनियों

ने श्रीस्वामी की अगवानी कर उन्हें तिरुमलगिरियों पर ले आये और वहाँ बस कर अनाथ कलियुग का तारण करने का आग्रह किया। श्रीनिवासप्रभु तिरुमलगिरियों में रहते हुए लोगों का पाप-नाश करते हुए ''श्री वेंकटेश्वर स्वामी'' बन गये, अर्थात्, 'पापों को कटाने वाले स्वामी।'

श्रीस्वामी से ब्रह्मेन्द्रादियों की भेंट

स्वामी वेंकटेश भगवान ने कलियुग की बागडोर संभाली थी। अपनी प्रिय पत्नी लक्ष्मी देवी को ''व्यूहलक्ष्मी'' के रूप में धर कर वे देव गद्दी पर आसीन थे। कलियुग संचालन तिरुमलगिरियों से हो रहा था। एक दिन ब्रह्मदेव ने अपने साथ इन्द्र और अष्ट दिक्पालों को साथ लेकर तिरुमलगिरियों पर आकर श्रीस्वामी से भेंट की।

ब्रह्मदेव ने वेंकटेश भगवान से निवेदन किया, ''हे चौदहों भुवनों के परम पूज्य पिता! यह तो हर्षोल्लास की बात है कि आपने अनाथ कलियुग के शासन का भार वहन किया है। मगर यह उल्लेखनीय बात है कि द्वापरयुग में मरने से बचे कुछ राक्षस कलियुग में जन्म ले आये हैं और जनता को खूब सता रहे हैं। उन के आतंक से जनता काफी त्रस्त है। सर्वत्र आर्त्तनाद मचे हुए हैं।''

''कलियुग में राक्षस जल, थल दुर्गों में बस कर छुपे हुए लोगों को बाधा पहुँचा रहे हैं। हे कलियुगेश! इन उच्छृंखल दानवों का संहार कर कलियुग में शांति-सुख की स्थापना कीजिए।'' भगवान को देवताओं की इस विनम्र प्रार्थना पर तरस आयी। उन की रक्षा करने का निर्णय लिया।

ब्रह्मोत्सवों का प्रादुर्भाव

वेंकटेश भगवान ने ब्रह्म, इन्द्रादि देवताओं की प्रार्थना से तरस खा कर, कलियुग में फैले दानवों का वध कर, कलियुग को निष्कंटक बनाना चाहा।

इस कार्य-साधना के क्रम में श्रीनिवास ने अपने सुदर्शन-चक्र को आदेश दिया कि वह राक्षसों पर जाये और उनका वध कर, कलियुग का तारण करे! स्वामी की आज्ञा से श्री सुदर्शन समस्त भुवनों पर छा गया। जल, थल दुर्गों में छुपे दुर्दान्त राक्षसों को संहार कर, विजयी हो कर श्रीस्वामी के चरणों-तले लौट आया।

सुदर्शन के द्वारा निर्वहित इस महत्तर विजय पर समस्त देवता लोगों ने जय-जय करके अपना परितोष व्यक्त किया! ब्रह्मदेव की प्रसन्नता की कोई सीमा ही नहीं थी।

तब ब्रह्मदेव ने जगत्पिता श्री वेंकटेश्वर से विनम्र विनती प्रस्तुत की कि श्री सुदर्शन की इस विजय-यात्रा के स्मरण में उन के लिए एक ''विजयोत्सव'' का आयोजन करने की आवश्यकता है, जिसकी प्रभु अनुमति दे!

श्री सुदर्शन की विजयी यात्रा के अवसर पर अपने लिए एक 'विजयोत्सव' की अनुमति श्रीस्वामी श्री वेंकटेश्वर ने प्रदान कर दी! सुदर्शनचक्र धारी श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए ब्रह्मोत्सव करने का शुभारंभ इस आशय से आरंभ हो गया। स्वामी के ब्रह्मोत्सवों के संदर्भ में चक्रत्ताल्वार या सुदर्शन के विजयोत्सव के प्रतीक के रूप में अंतिम दिन चक्रत्ताल्वार का स्वामी की पवित्र पुष्करिणी में अवभृत स्नान कराने की परंपरा भी चल पडी। इसे स्वामी श्री वेंकटेश्वर भगवान के विशेष कैंकर्य ही माना गया।

ब्रह्मदेव ने इन्द्रादि समस्त दिक्पालों के संपूर्ण सहयोग से इन विजयोत्सवों का महा वैभव से निर्वहण किया, जो उत्सव आगे चलकर ''ब्रह्मोत्सव'' नाम से श्रीस्वामी के उत्सवों के इतिहास में शाश्वत बनकर रह गए।

ब्रह्मोत्सवों की आरंभ-हेला

तिरुमल-श्रीवारि ब्रह्मोत्सव इस साल अश्वयुज-शुद्ध-पाड्यमी के शुभ दिन प्रारंभ किये जाते हैं। इस वर्ष वह तिथि 26-09-2022, सोमवार के दिन अंकुरार्पण करते है।

वास्तव में हर वर्ष कन्याराशि में सूर्यभगवान के प्रवेशित शुभ मुहूरत के शुभ अवसर पर, शुभ नक्षत्र-युक्त शुभ दिन पर ब्रह्मोत्सवों का शुभारंभ किया जाता है।

इस संदर्भ में मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने ब्रह्मोत्सवों के प्रारंभ की पुण्य-तिथि का व्याख्यान अपने सप्रामाणिक ''श्रीवेंकटाचल माहात्म्य'' नामक ग्रन्थ में इस प्रकार किया है - ''जब श्री वेंकटेश सम्राट् ने सुदर्शन की विजयी यात्रा पर विजयोत्सवों की अनुमति प्रदान की, तो ब्रह्म ने 'विखनस महामुनि' को बुलवाया, और श्री महाविष्णु की विशेष 'अर्चनाविधि' को निर्धारित करने को कहा। ब्रह्म की आज्ञा पर वैखानस ने श्री महाविष्णु को विशेष अर्चना विधि को निर्धारित किया। जो आगे वैष्णवागम या वैष्णव संप्रदाय के रूप में विकसित हुआ।

विखानस महामुनि की अर्चना-विधि को ''वैखानस-आगम'' कहा जाता है। श्रीवैष्णव लोगों की पूजा-विधि वैखानस आगम के अनुसार होती है। मुहूर्त निर्णय करते हुए वैखानस बोले, ''कन्याराशि में सूर्यभगवान के प्रवेशित मास में - चित्रा नक्षत्र-युक्त के होने के शुभ मुहूर्त्त पर शास्त्रोक्त-विधि से श्रीस्वामी के विजयोत्सवों के लिए ''ध्वजारोहण'' किया जाना चाहिए।

उत्तराषाढ़ के प्रवेश पर 'रथोत्सव' मनाना चाहिए। श्रवणा-नक्षत्र के शुभ दिन पर 'चक्रस्नान' संपन्न किया जाये!''

ब्रह्मोत्सवों का क्रम

आज, इतने सालों के पश्चात् भी तिरुमल ब्रह्मोत्सवों की इसी क्रम-परंपरा में कोई परिवर्तन नहीं है! ब्रह्मोत्सव नक्षत्र-प्रधान हैं।

1) इस वर्ष अश्वयुज माह की शुद्ध पाञ्चमी, 26-09-2022, शुभसोमवार की पुण्यतिथि पर श्रीस्वामी के ब्रह्मोत्सवों का 'अंकुर-अर्पण' किया जाता है।

2) 27-09-2022, मंगलवार, हस्तानक्षत्र पर श्रीवारि 'ध्वजपट-आरोहण' किया जाता है।

3) 01-10-2022, शनिवार, ज्योष्ठानक्षत्र पर श्री वेंकटेश्वर भगवान की 'गरुड़-वाहन सेवा' का आयोजन होता है। गरुड वाहन श्री वेंकटेश्वर स्वामी का प्रियवाहन है। उस दिन संध्या को साक्षात श्री महाविष्णु ही गरुड पर आरूढ़ होकर तिरुमल की 'माडावीथियों' में शोभायात्रा में निकले हैं। जो एक अपूर्व दृश्य-शोभा बन करके भक्तों के मन को आनंदित कर देता है।

4) भगवान श्री बालाजी का अपना ''स्वर्ण-रथ'' विद्यमान है, जिसका तिरुमल-माड़ावीथियों में 02-10-2022, रविवार के दिन मूलानक्षत्र के शुभ-अवसर पर अद्भुत समारंभ हो विचरण किया जाता है।

5) 04-10-2022, मंगलवार, उत्तराषाढ़ा-नक्षत्र के होते हुए शुभ मुहूरत पर श्रीस्वामीजी का निजी रथोत्सव अत्यंत कोलाहलपूर्ण ढंग से संपन्न किया जाता है, जो एक

अत्यंत विशेष, वैभवपूर्ण, शोभायुत यात्रा के ढंग से भक्तों के मन को मोहित करता है। भगवान बालाजी के रथोत्सव संरंभ देखने देश के कोने-कोने से भक्तजन उपस्थित हो आते हैं।

6) बुधवार, 05-10-2022 को 'विजयदशमी' पर्व दिन पड़ता है। आज ही तिरुमल श्री वेंकटेश्वर के ब्रह्मोत्सवों की परिसमाप्ति होती है। उस दिन का नक्षत्र 'श्रवणम्' होता है, जो श्रीस्वामी के जन्म-नक्षत्र होने से विशेष महत्व रखता है!

इसी शुभ दिन पर ''चक्रस्नान'' भी होता है। अजेय श्रीस्वामीजी के सुदर्शन-चक्र की उग्रता के समापन-हेतु भव्य अर्चक-बृन्द तुलसी-माला से अलंकृत कर उसे श्रीस्वामी की पुष्करिणी में तीन बार डुबाते हैं। अशेष जन-वाहिनी इस ''चक्रस्नान'' का वीक्षण करती है। सैकड़ों की तादाद में भक्त, स्त्री-पुरुष, उस मंगलमय शुभ अवसर पर चक्र के साथ पुष्करिणी में डुबकियाँ लगा कर पुनीत बन आनंदित हो जाते हैं!!

चक्रस्नान ब्रह्मोत्सव के संरंभों में आखिरी उत्सव है।

ब्रह्मोत्सवों के अवसर पर श्रीनिवास की वाहन-सेवाएँ

तिरुमल ब्रह्मोत्सवों की समायत्तता में नव-कलश-पालिकाओं की आराधना, नैवेद्य, होम तथा चक्र की बलि, अर्चना आदि नित्य-कृत्य मनाये जाते हैं। तत्पश्चात् रोजाना श्री स्वामी की वाहन-सेवाएँ अत्यंत वैभवपूर्ण ढंग से संपन्न होती है, जिन्हें देखने भक्तों की दोनों आँखें अति धन्य बन जाती हैं!!

भगवान श्री वेंकटेश्वर के कुल आठ वाहन होते हैं, जिन सबका मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने अपने सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ ''श्रीवेंकटाचल माहात्म्यम'' में वर्णित यों किया है -

1) बृहद शेषवाहन : यह श्रीस्वामी का सर्व प्रथम वाहन है। इसका काफी बड़ा परिमाण है। यह रात को मनाये जाने वाला उत्सव है।

2) लघुशेषावाहन : नाम से ही ज्ञात होता है कि यह लघुशेषवाहन है, जो ब्रह्मोत्सव के दूसरे दिन मनाया जाता है। यह प्रातः मनानेवाली वाहन सेवा है।

3) तीसरे दिन 'सिंहवाहन' प्रातःकाल के समय में विचरता है।

4) चौथे दिन प्रातः 'सर्वभूपाल-वाहन' पर स्वामी श्री वेंकटेश्वर नेत्रोत्सव बन कर चलते। और रात को 'कल्पवृक्षवाहन' पर विहरण करते हैं।

5) पाँचवे दिन प्रातःकाल में मोहिनी वेषधारी हरि का आंदोलिकोत्सव संपन्न होगा और रात को 'गरुडोत्सव' होगा।

6) छठे दिन सुबह विख्यात 'हनुमान-वाहन' पर बालाजी भगवान को चलते हैं, तो रात्रि के द्वितीय प्रहर में स्वामीजी का बसंतोत्सव होता है। इस उत्सव के उपरांत 'ऐरावत' पर श्रीहरि का माडावीथियों में विहरण होता है।

7) 'सूर्यप्रभा-वाहन' सेवा सातवें दिन प्रातःकाल में होती है। रात को 'चंद्रप्रभा-वाहन' अत्यंत शोभायमान ढंग से श्रीस्वामी को लेकर चलता है।

8) आठवें दिन सुबह 16 प्रकार के महादान आदि का क्रतु का निर्वहण आनंदनिलय में किया जाता है। महादानादि-क्रतु के पश्चात् श्रीनिवासप्रभु का महारथोत्सव होता है।

उस महारथ पर श्री-भू-नीलादेवी-समेत आसीन हो भगवान वेंकटेश सम्राट् चारों माडावीथियों में विहरण करने लगते हैं, जिस महारथ का ब्रह्मेन्द्रादि देवतागण संचालन करते रहते हैं। समस्त दिक्पाल, गरुड़, गन्धर्व, किन्नेर आदि अमरगण, सिद्ध, साधक, विद्याधर आदि महागण श्रीस्वामी की सेवा करते हुए चलते हैं। देव-दुंदुभियों का वादन होता है। और सामान्य भक्तगण खेल-कूद, गान-वादन, भजन-कीर्त्तन करते हुए स्वामी के महारथ के आगे चलते हैं।

मंगलाशासन

इस प्रकार श्री वेंकटेश्वर के महारथोत्सव के साथ ही तिरुमलगिरियों पर श्रीस्वामीजी के ब्रह्मोत्सव समाप्त होते हैं। तदनंतर दिन ब्रह्मादि सुरगण श्रीस्वामी की पुष्करिणी में अवभृथ-स्नान करते हैं। अर्थात् महाक्रतु के निर्वहण के पश्चात् आचरित करने वाला मंगल स्नान करते हैं। तदुपरांत ''चक्रत्ताल्वार'' का स्नान होने से श्रीवारि ब्रह्मोत्सवों की परिसमाप्ति होती है। आखिरी दिन पर अर्चक स्वामी ध्वजस्तंभ की पूजा कर, ध्वजपट का अवरोहण करते हैं। इससे ''सालकट्ल ब्रह्मोत्सवों'' का सर्व समापन हो जाता है। इस रूप में ब्रह्मोत्सव श्रीनिवास के समस्त उत्सवों में अपना वैशिष्ट्य रखते हैं। मूल कारण यही है कि श्री महाविष्णु कलियुग में विशेष अवतार के रूप में अवतरित हुए हैं। वे ही श्री वेंकटेश्वर स्वामी हैं। कलियुग को समस्त कलि-दोषों से कष्टों से मुक्त करने ही स्वामी वैकुंठ से सीधे श्री शेषाचल पर पधारे हैं। कलि पुरुष या राक्षसों से जन जन को तारने उन्होंने अपने निज आयुध सुदर्शन का उपयोग किया। शंख-चक्रधारी श्री वेंकटेश्वर इसलिए कलियुग के देवाधिदेव और जगत्रक्षक बने हुए हैं।

श्री वेंकटेश भगवान की उवाचा है कि जो भक्त उन के अपने चक्रत्ताल्वार के साथ पुष्करिणी में डुबकी लगाता है, वह पाप-विमुक्त बन, भाग्यवान होकर, सुख प्राप्त करेगा।

वामनावतार और उसका वैशिष्ट्य

श्रीमती पी.सुजाता,
मोबाइल - 8928952622.

जब जब होइ धरम की हानी
बाढहिं असुर, अधम, अभिमानी
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीर।
हरहिं कृपानिधि सज्जन - पीरा।।
(गोस्वामी तुलसीदास - रामचरित मानस)

श्लो-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (-भगवद्गीता)

जब-जब संसार में दुष्ट दानवों के अकृत्य बढ़ जाते हैं और धर्म की हानी हो जाती है तब-तब परमात्मा का धरित्री मंडल पर अवतार हो जायेगा और कृपानिधि हरि सज्जनों की पीड़ा हरेगा। ऐसा गीताचार्य ने कुरुक्षेत्र नामक रणक्षेत्र के बीचों बीच घोषणा कर दी थी।

वैसे, वैष्णव धर्म की यह रीति रही है कि पीर पराये हरना। विष्णु महादेव ने धर्मोत्थान के उपलक्ष्य में अब तक कुल २१ अवतार धरे हैं - मत्स्य, कूर्म, वराह, राम, बुद्ध, हयग्रीव, ऋषभ, दुर्वास आदि। श्री स्वामी के एक एक अवतार की एक एक विशेषता है। उन एक एक अवतार की पृष्टभूमि, अवतार का संचालन व महिमा के वर्णन में सारे पुराण रचे पड़े हैं।

वेद-परिरक्षण के हेतु मत्स्यावतार हो आया, तो क्षीरसागर मंथन के महत्कार्य हेतु कूर्मावतार संपन्न हुआ। भूमाता के संकट दूर करने वराह के रूप में श्रीहरि ने अवतार धरा। नरसिंह का आविर्भाव परम अद्भुत आविष्कार है। तब तक राक्षस धरती पर ऊधम मचा रहे थे। धर्म की काफी हानि होने लगी थी। वैदिक धर्म का प्रचार अंत होकर, दानवों ने अपनी मूर्तियों तथा व्यक्ति-पूजा के बढावे पर जोर देते हुए धर्म-भ्रष्टता पर तुले हो गये थे और साक्षात् विष्णुदेव के अस्तित्व को ही ललकारा था। उनका गर्व कगारों पर चढ़ चुका था।

तब देवता लोगों की अपनी बारी आ चुकी थी कि वे अपना अस्तित्व साबित कर सकें। हिरण्यकश्यप नामक घमंडी, पाखंडी राक्षस-सम्राट् ने हरि के अस्तित्व को ही ललकारा, तो स्वामी ने एक स्तंभ में अतिघोर आकृति में, जो आधा नर और आधा सिंह था, प्रकट होकर अपनी उत्कट समर्थता को व्यक्त कर, घमंडी राक्षसों को अद्‌भुत रस में डुबो दिया।

नारसिंह अवतार का पारमार्थ था - बाहुबली, दुर्दान्त राक्षसों को शक्ति भर डराना और उन्हें यह चेतावनी देना कि देवता-लोग धर्म-भ्रष्टता रोकने चाहे कितने भी सौदे पर तुले खड़े हो जायेंगे।

वामनावतार - पृष्टभूमि

नरसिंहावतार से दैत्यों को अपनी पराक्रम-भीरुता का परिचय हो गया था। वे देवताओं के सन्नाह, संरंभ व बल-संपन्नता को आँक गये और अपनी सीमा में रह गये। नरसिंहावतार से ''प्रह्लाद'' जैसे भक्त-वरेण्य का उद्गम हो पाया। प्रह्लाद वैदिक मतावलंबी दानव था और सख्त आर्षधर्म सात्विक था। प्रह्लाद ने कई हजार साल शासन चलाया था। बड़ा ही न्याय-कोविद राजा था।

प्रह्लाद की पत्नी का नाम 'देवी' था, जिसमें पाँच पुत्र जने थे। उनमें विरोचन नामक एक पुत्र था। विरोचन के पुत्र का नाम 'बलि' था, जिसका असली नाम 'सूरसेन' था। सूरसेन अत्यंत बल-पराक्रम संपन्न राजा था, अतएव वह बलि कहलाया था।

बलि चक्रवर्ती

सम्राट बलि महा बल पराक्रम संपन्न होते हुए महा दाता थे। कृतयुगे बलिर्दाता, अर्थात् समूचे कृतयुग में बलि-जैसा महादानी न था। वह अर्थियों को जी-भर देता था। देवता लोग बलि के इस दानगुण को आधारभूत मान कर, उसे हराने की बात सोची।

बलि दानी था, आर्षधर्म का अनुवर्ती राजा था। मगर, उसे देवताओं से चिढ़ थी। कई बार उसने देवताओं को भार-भार भगाया था। अनगिनत बार उसने स्वर्ग पर हमला कर, इन्द्र को मार भगाया। उसके हमले के ड़र के कारण देवताओं का राजा इन्द्र कभी गधा बनकर पशुओं के झुन्ड में छुपा फिरता था, तो कभी भौंरा बन कर कीटों में छुपे उड़ता था।

इस कदर बलि यानी शूरसेन महाराजा अपने दायादी देवताओं को खूब सताता था। सम्राट् बलि की पत्नी ''अशना व विन्ध्यावली'' और पुत्री ''रत्नमाला'' थी।

वामन का आविर्भाव

इस प्रकार निरस्त देवता लोग राजा बलि से काफी पीडित व त्रस्त थे। बलि के हमलों से दंग आ चुके थे। अतएव वे सब निरीह देवी और देवता लोग ब्रह्म की सलाह के अनुसार भगवान श्री महाविष्णु के चरणों-तले जा गिरे और उसके आगे भाव-विभोर बन, विलाप करते हुए अपनी राम कहानी रोयी। देवताओं के इस करुणापूरित निवेदन पर विष्णुमूर्ति ने तरस खाया। उसने उन्हें वचन दिया कि वह अवतार धर कर धरातल पर जायेगा और बलि चक्रवर्ती के घमंड को चूर-चूर करके रहेगा।

विष्णुमूर्ति से इस विधि आश्वस्त होकर देवता लोग निश्चिन्त अपनी पत्नियों समेत घर वापस चले। और फिर, विष्णुमूर्ति का भूलोक में एक विशिष्ट गर्भालय में जनाने के देवताओं का जतन आरंभ हो उठा। अदिति और कश्यप नामक दिव्य दंपती होते थे, जो देवताओं को ही जनम देने का परम पवित्र कार्य-वहन करते आ रहे थे। कश्यप महा भोगी था। उस की 12 पत्नियाँ थीं। विष्णु भगवान को कश्यप-अदिति दंपतियों में जनाने का निश्चय किया गया। देवमाता अदिति के गर्भ में ''वामनदेव'' पैदा होकर आया था।

वामन का बाल्य और विद्याभ्यास

वामन भगवान 52 अंगुल शरीर वाला था। अर्थात्, काफी वह ठिगना था। शिशु ठिगना था, अतएव उसका ''वामन'' नाम रखा गया था।

बच्चा सात - आठ साल का हुआ, तो महर्षियों ने उसका 'उपनयन-कर्म' किया।

सूर्यदेव ने वामन को 'सावित्री (गायत्री महामंत्र)' का उपदेश दिया।

देवगुरु बृहस्पति ने यज्ञोपवीत-धारण करवाया।

कश्यप ने स्वयंमुंजी पहनायी।

माता अदिति ने अपने लाड़ले को 'कौपीन' पहनाया।

ब्रह्मचारी को वनों के पति सोम (चन्द्र) ने कृष्णाजिन (हिरन का चमड़ा) और दंड़ (लकुटि) समर्पित किया। गगन के अधिष्ठान देवता ने बालक को छत्र प्रदान किया।

ब्रह्म ने कमंडलू और सरस्वती माता ने अक्षमाला समर्पित की। और, सप्तर्षियों ने कुश-पवित्र प्रदत्त किये।

यक्षों का राजा कुबेर ने 'भिक्षापात्र' प्रदान किया। और भिक्षुक को भवानी ने पूर्ण-भिक्षा दी। अदिति-कश्यपों का उस माया-माणवक ने ब्रह्मर्षियों से समस्त वेदशास्त्रों का अध्ययन किया।

बलि की यज्ञ वाटिका में वामन

इस प्राकार देवी-देवताओं के हाथों उपनयन-संस्कार पाकर वामन ने अपने गरीब माता-पिता के उदर पोषणार्थ बाहरी दुनिया में पदार्पण किया। उसे सांसारिक यात्रा पर निकले हुए कुछ ब्राह्मण मिले, जिनसे बाल-वामन ने इस प्रकार जिक्र किया, "ऐ विशुद्धमान ब्रह्मज्ञानियों! इस तरह आप-सरीखे ब्राह्मण-लोगों की याचना के गौरव में इष्टार्थ संपदाओं का दान करने वाले दानवीर इस भूमंडल पर उपस्थित हैं, क्या? क्या आप सब कहीं से संपदाएँ बटोर कर ला रहे हैं। मुझे बताइये।"

कुमारक के इस प्रश्न के उत्तर में उन विप्रों ने जवाब दिया, "हाँ, वामन! दाता लोग हैं, अवश्य! धन-धान्य-संपत्ति तथा काम्यार्थ लेकर विप्र गृह पधारते हैं और अपनी घर-गृहस्थी चलाते हैं। मगर, एक बात सत्य है। अभी तो इस धरातल पर बलि चक्रवर्ती के सरीखा वदान्य नहीं हो सका। बलि अभी तो अपना सौवाँ अश्वमेध यज्ञ कर रहा है। इस सुभ अवसर पर बलि से जो चाहे सारी संपदाएँ दान में पा सकते हैं, जाओ।"

इन लाभ-वचनों से आनंदित वामन-बालक अपने माता-पितरों से बलि की यज्ञ-वाटिका में जाने की अनुमति पाकर, बलि की राजधानी की तरफ चल पड़ा।

बलि की यज्ञ वाटिका में वामन का प्रवेश

और, कतिपय दिवसों में वामन अन्य ब्राह्मण-वटुओं के संग जाकर बलि की मखांतर्वेदी की वाटिका में प्रविष्ट हुआ।

बलि की यज्ञ-वाटिका राक्षसों के लिए बिल्कुल प्रवेश योग्य न था। वहाँ आहूत बड़े-बड़े मुनि, ऋषि, सिद्ध-साधक अपने लिए उचित बड़े-बड़े आसनों पर आसीन यज्ञ की

रीति विलोकते थे। वह वाटिका गज, तुरग आदि पर सवार सिपाहियों-द्वारा रक्षित द्वार वाला था। उस महाकाय यज्ञ-कुंड से निकलता हुआ धुआँ आकाश में इतना गाढ़तम बन कर साक्षात् सूरज के महारथ को घेरे धूमिल कर दे रहा था।

वामन की तेजोराशि इतना प्रकाशवान थी कि सभिकों ने उसे बाल-रूपी शंभु समझा, तो कुछ लोगों ने उसे हरि समझा। कुछ पंडितों ने उसमें ब्रह्म, अग्नि, इन्द्र आदियों का दर्शन पाया।

वामन-वटु-यज्ञ-कार्यों की गति में भाग लेते हुए यज्ञकर्त्ता बलि व शूरसेन महाराजा के समीप पहुँचा और उसे इस प्रकार आशीर्वचन दिया, ''स्वस्ति, तीन लोकों के शासनकर्त्ता। अति सुलभ ढंग से देवताओं के ध्वंस कर देने वाले देवराज। उदार पद पर आसीन व्यवहर्त्ता। मुनींद्रों के द्वारा सराहे गये यज्ञ महाकर्त्ता। देव-सुंदरियों के गले के सुवर्ण-मंगलसूत्रों के परिहर्त्ता। दानव लोक-भर्त्ता! तुझे मंगल हो।''

वामन बाल-वटु के इस भव्य आशीर्वचन से राजा महाबलि अत्यंत संतुष्ट हुआ और प्रश्न किया, ''ऐ वटु! कौन हो तुम। किससे संबन्धित हो? मेरे इस पवित्र अश्वमेध दक्ष-वाटिका में प्रवेश से मैं धन्य हूँ! बोलो, क्या चाहते हो?''

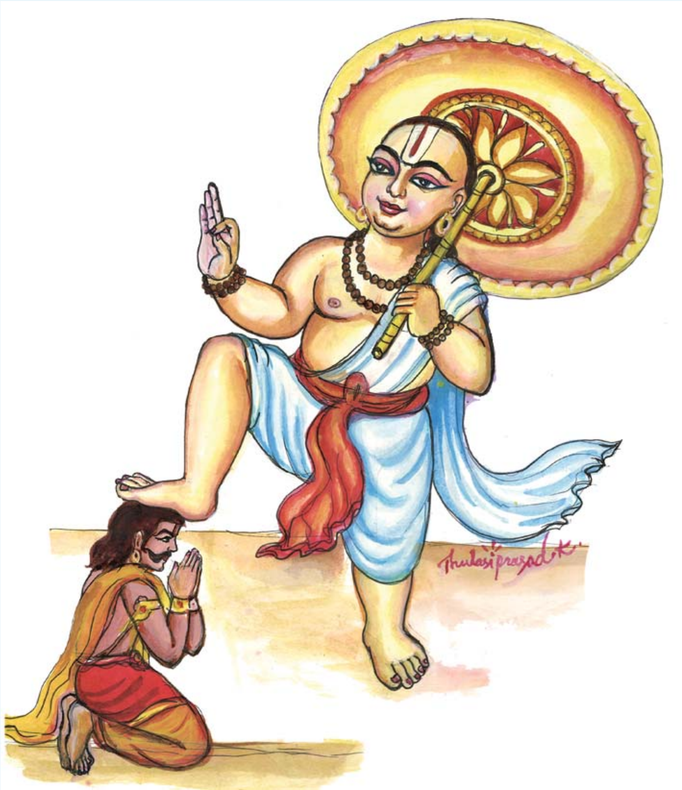

तीन फुट जमीन

राजा के इस सवाल के प्रत्युत्तर में वामन-वटु ने, ''राजा! मैं अकेला ब्राह्मण बालक हूँ। वटु हूँ। ब्रह्मचारी हूँ। मुझे इन सांसारिक बंधनों, जमीन-जायदादों से क्या संबंध है? मुझे तो तीन फुट जमीन चाहिए, बस! इतना पर्याप्त है, राजन! दिला दो!''

दानव राजा बाल-वटु की इस माँग से सन्न रह गया। उसने बालक को समझाया कि वह वस्त्र, घोडे, हाथी, स्वर्णाभूषण, जवान लड़कियाँ, मकान, जमीन आदियों को दान में मांगने के लिए प्रोत्साहित किया, मगर, वामन टस से मस न हुआ। वह तीन ही फुट जमीन चाहता था।

राजा बलि का पराभव

इतने में राजा बलि के कुलगुरु शुक्राचार्य भाँप गया कि वामन कोई सीधा-सादा बालक नहीं, बल्कि राजा बलि को परास्त करने आया हरि है।

शुक्र बलि से बोल उठा, ''ऐ दनुजेन्द्र! यह ब्राह्मण नहीं है। यह तो देवकार्य की साधना-हेतु अदिती के गर्भ में पैदा हुआ हरि, विष्णु तथा अव्यय इस तरह बाल-वटु बन कर आया हुआ है। सावधान राजा! अगर तू इस माया-माणवक की माँग देने पर सिद्ध हो जाओ, तो तुम्हारा सत्य नाश हो जायेगा। मत दे तीन फुट भूस्थल का दान।''

राजा ने अपनी आफत भाँप ली।

उसने अपने कुलगुरु की ओर निहारा, फिर सामने खड़े माया-वटु की तरफ। राजा ने गुरु शुक्राचार्य की तरफ देख कर कहा, ''हे महात्मन! क्या मुझसे पहले- शिबि आदि महान् कीर्तिशाली राजा न हुए थे क्या? किधर गये वे सब राजा। उन सब के राज्य कहाँ चले

गये? क्या वे सब यशोकामी राजा-महाराजा संपदाओं की गठरियाँ बाँध कर अपने साथ ले सके।''

कुलगुरु भार्गव निर्विण्ण हो राजा शूरसेन को निहारता था।

राजा बलि फिर बोल उठा, ''गुरुदेव! आज मैं भली-भाँति जानने लगा हूँ कि साक्षात् वैकुंठधाम के वासी श्रीहरि मुझसे तीन फुट जमीन दान में माँगने मेरे आगे अपना सर्व शुभ-युत परम हस्त पसारे खड़ा है। उसका वह हाथ, जो जगन्माता महालक्ष्मी के शिरोज, वक्षोज और समस्त शरीर पर फिरने वाला शुभ-हस्त दान लेते समय मेरे हाथ के नीचे होगा। मुझे-जैसे अकिंचन के भाग्य को किस मुँह से सराहें, महाशय!''

त्रिविक्रम दर्शन

राजा बलि माया-माणक्क को तीन फुट जमीन दान में देने पर सिद्ध हो गया। राजा की धरम पत्नी विन्ध्यावली वटु के पाँव देने एक श्रेष्ठ हेम-घट में पानी ले आयी। राज-पत्नी पानी छोडती थी कलश से। कुलगुरु शुक्र माया रूप में कलश में घुस कर पानी को गिरने से रोकने लगा, तो वामन ने एक कुश को लेकर कलश की शुंडा में दे घुसाया, तो शुक्र की एक आँख फूटने से वह हमेशा के लिए काना बन गया था।

फिर पानी राजा के हाथ से वामन के हाथ में गिर गया और दान संपन्न हो आया।

वामन एक पाँव अपना पूरे भूमंडल पर धराया।

और एक अपना पाँव समस्त आसमाँ पर जमाया और राजा बलि से पूछा कि तीसरी फुट की जगह कहाँ पर है?

भूम्याकाशों पर वामन का श्रीपाद छाया हुआ है। अब वामन का तीसरा पाद कहाँ रखा जाय?

राजा सूरसेन देवताओं का षड्यंत्र समझ गया।

अपने से दान माँगने यह वैकुंठ धाम वासी श्रीहरि अपने सामने साक्षात् खड़ा हुआ है, जिसके दो निज पाद आकाश-जमीन पर छाये हुए हैं। ऐसा कोई कर सकता है? ऐसा करतब व महिमा अपने दैत्यों में कोई प्रदर्शित कर सकता है।

राजा बलि को अब लगने लगा आप इस महत्तर महत्वपूर्ण देवमाया के आगे कितना लघु है।

पाताल में राजा बलि

बाल वामन प्रश्न कर रहा था - तीसरा पाद किस पर रखें?

इस सवाल के आगे राजा बलि अत्यंत विनम्रपूर्वक अपना शिर झुकाया और कहा, ''परम पिता! अपना तीसरा चरण इस अकिंचन के शिर पर रखा जाय।''

वामन अपने आगे विनम्र शिर झुकाये हुए उस सुर-द्वेषी दानव को पाताल में कुचल देने वाला ही था कि वहाँ राजा बलि के पितामह ''प्रह्लाद'' पहुँच गया। प्रह्लाद ने वामन से प्रार्थना की कि यद्यपि राजा सूरसेन सुरद्वेषी था तथापि वह वैदिक अथवा आर्षधर्म का सख्य समर्थक है, अतएव, उसे क्षमा कर दे।''

श्रीहरि शांत हो गया। अपने त्रिविक्रम-रूप का उपसंहरण कर लिया। राजा बलि को आदेश दिया गया कि वह ''पाताल'' की जगह ''सुतल'' में जाये और वहाँ अपना सुपरिपालन चलाए। सुतल उन दिनों का ''आन्ध्रा प्रान्त'' था।

समापन

राजा बलि वैदिक धर्मावलंबी शासक था। भक्त-श्रेष्ठ प्रह्लाद का पोता था। राजा बलि के वृत्तान्त में दानवों को सिर्फ चेतावनी देनी थी कि सुर-द्वेष छोड़ो। देवताओं के साथ मन जोड़ो। भगवान त्रिविक्रम ने राजा बलि के वृत्तान्त से चौदहों भुवनों में पराशक्ति की अनंतता का परिचय दिया। वे सर्वोपरी और सर्वव्याप्त हैं।

ॐ नमो नारायणाय।

सूर्यप्रभावाहन

- डॉ.बी.के.माधवी,
मोबाइल - 9441646045.

सारे लोकों का प्रत्यक्ष देवता 'सूर्य भगवान' ही है। वे ही परमेश्वर स्वरूप है। भूलोक में अग्नि, अंतरिक्ष में वायु, स्वर्ग में सूर्य के नाम से उनको ही पुकारते हैं। लोकों का प्राण कारक, अग्नि प्रदाता - सूर्य, तेजोवान भगवान हैं। वे ही सकल जीव राशियों का जीवन दाता हैं। इस विशाल विश्व का प्रत्यक्ष देवता सूर्यनारायण है। सूर्यरश्मि के कारण ही सारे जीव बढते हैं। सूर्यरश्मि के बिना घास भी पैदा नहीं होती। सूरज के कारण ही समुंदर के पानी भाष्प बनकर बादलों के रूप में बदलकर वर्षा होकर फसल उगती है। वही फसल सारे जीवकोटि का आधार बनती है। इसी कारण सूर्य सारे लोकों का प्राणदाता, अन्नदाता, प्रत्यक्ष देवता के रूप में पूजित हो रहा है। पुराणों के द्वारा विदित होता है कि सूर्य अदिति-कश्यप का पुत्र हैं। वह रथारूढ होकर मेरु पर्वत की परिक्रमा करता रहता है। लेकिन बाद में वैज्ञानिकों ने बताया कि- पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा कर रही है।

गरुत्मंत के भाई अनूर ही उनका रथ सारथी है। पृथ्वी अपने आप में परिक्रमा करते हुए सूर्य की परिक्रमा कर रही है। इसी कारण दिन-रात, साल जैसे कालमान बना है। सूर्य के रथ में एक पहिया ही रहता है, वही कालचक्र है। यह साल का प्रतीक है। इस पहिए में बारह पत्ते रहते हैं। वे ही बारह महीने हैं। मेष आदि बारह राशियों में महीने में एक राशि में सूर्य परिभ्रम करता रहता है। एक-एक राशि में आने पर उस राशि के नाम से जाने जाते है। इस प्रकार बारह राशियों में रहे सूर्य ही 'द्वादशादित्य' के रूप में जाने जाते हैं।

काल नियामक

संवत्सर काल को दो भागों में विभाजित करते हैं। वे ही उत्तरायण, दक्षिणायन। जनवरी 14 से लेकर जुलाई 13 तक उत्तरायण है। वैसे जुलाई 14 से लेकर जनवरी 13 तक दक्षिणायन है। (तारीखों में थोडा सा परिवर्तन होने की संभावना है।) उत्तरायण में सूर्य का गमन थोडी-सी उत्तर दिशा में रहता है। दक्षिणायन में सूर्य का गमन थोडी दक्षिण की ओर रहता है।

आरोग्य प्रदाता

सूर्योपासना के कारण बीमारी कम होती है, वेद काल में कण्व महर्षि के द्वारा दर्शन किये तीन मंत्रों का जप करने अपने त्वचा रोग को दूर किया जा सकता है। वही तीन मंत्र 'तृच' के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। सूर्योपासना के कारण, सूर्य ग्रह प्रभाव के कारण आत्मशक्ति बढती है। नेत्रशक्ति बढने का, हृद्रोग निवारण के लिए सूर्य का ही आराधना करनी है। मेषराशि में सूर्य के रहने पर जन्मित सारे लोग आत्म प्रभावाधिक के रूप में रहते हैं। सूर्य आरोग्य प्रदाता है। 'आरोग्यं भास्कराधिच्छेत्' है न। सूर्यकांति में रहनेवाले नीलि किरणों के प्रभाव के कारण ही हमारा शरीर सहज रूप से विटमिन 'डी' की उत्पत्ति खुद करती है। 'डी' विटमिन का लोप होने से हड्डियों का बढना कम होता है। किरणजन्य संयोग के कारण ही सृष्टि, आहार, पोषण आदि तैयार हो रहे हैं। सूर्य किरण मानव शरीर के ऊपर जरूर पडना है। इसीलिए वैदिक वाङ्मय में 'संध्यावंदनं', 'सूर्यनमस्कार', 'अर्घ्यप्रदान' आदि प्रक्रियाओं का प्रवेश हुआ है।

सूर्यकांति सात वर्णों में रहती है। उन कांति वर्णों को ही सात घोडों के रूप में कहकर, सूर्य को 'सप्ताश्व', 'सप्तसप्ति' कहा गया है। वास्तव में वेग ही उनका अश्व है। बाकी ग्रहों का जल्दी भ्रमण करना, धीरे भ्रमण करना होता है। सूर्य का गमन एक ही है। उसीका नाम सप्त है। सप्त नाम का अश्व यानि कांतिगमन वेग ही सात के रूप में वर्णित है। 'अरुण' ने इस विषय का वर्णन किया है। स्थूल दृष्टि से कांति किरण सात रंगों में दिखाई देने पर भी अतिनील लोहितादि किरण करोडों हैं।

ब्रह्मोत्सवों में सातवें दिन सुबह श्रीहरि सूर्यप्रभावाहन पर आरूढ होकर तेजोविराजित होकर दर्शन देता हैं। सूर्य तेजोनिधि है। सकलरोग निवारक है। प्रकृति का चैतन्य प्रदाता है। वर्षा उनके द्वारा बढने वाली सस्य, चाँद, उनके द्वारा बढनेवाले ओषध आदि सूर्य तेज के कारण ही प्रकाशित है। ऐसे सूर्यप्रभावाहन पर अधिष्ठित करके स्वामी का कलियुग वैकुंठ के रूप में प्रसिद्ध तिरुमल में जुलूस निकलना आनंददायक है। थोडे प्रमाणों के द्वारा विदित होता है कि- ''श्रीमन्नारायण सूर्यमंडल मध्यवर्ती है'' - ''ध्येयः सदा सवितृमंडल मध्यवर्ती नारायणः।''

इसलिए ही भारतीय लोगों को हर दिन सुबह सूर्योपासना करने के संस्कार आये हैं। गायत्री मंत्र से देदीप्य सूर्य भगवान की श्रेष्ठाति श्रेष्ठ तेज की आराधना

करते है। उस तेज हमारी बुद्धियों को प्रेरणा देती है। मयूरादि, सांबु जैसे भक्त सूर्योपासना से आरोग्य बनकर, कृतकृत्य होने का प्राचीन सारस्वत के द्वारा विदित होता है।

''आरोग्यं सत्कवित्वं मति मतुलबलं कांति मायुः प्रकर्षं।
विद्या मैश्वर्य मर्धं सुतमपि लभते स्तोत्र सूर्यप्रसादात।।''

'सूर्य शतक' के द्वारा विदित होता है कि आरोग्य ही नहीं कवित्वं, विद्या, ऐश्वर्य, संतान जैसे फल सूर्यदेव के अनुग्रह के द्वारा प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद के चाक्षुषोपनिषद द्वारा विदित होता है कि- सूर्योपासना चक्षु रोगनिवृत्ति देती है। सूर्यप्रभावाहन पर श्रीनिवास के दर्शन तिरुमल यात्रियों को पूर्ण फल देता है। भक्तजनों को आरोग्य, ऐश्वर्य परिपूर्ण रूप से इस वाहन सेवा के द्वारा प्राप्त होते है।

''श्रीवत्स वक्षसं श्रीशं,
श्रीलोलं श्रीकरग्रहम्।
श्रीमन्तं श्रीनिधिं श्रीद्यं
श्रीनिवासम् भजेनिशम्।।''

सात पहाडों पर वार्षिक ब्रह्मोत्सवों में सातवें दिन सप्त रश्मियों से शोभित सूर्य की प्रभा पर स्वामी दर्शन देते हैं। ब्रह्मोत्सवों के समय भक्तजन बृंद श्रीनिवास को तिरुवीधि सेवा में इस प्रकार गाते हुए तन्मय होते हैं कि-

''इलवेलुपोकड्डु हरि इंटने उंडगा
पलुवेलुपुल तोडि भ्रमतलेल
मेलगि सूर्युडोक्कडु, मिक्किलि वेलुगगा
वेललेनि दीपमुलु वेयि नेमिटिकि?''

इलवेलुपु के रूप में श्रीनिवास के रहते अन्य देवताओं पर भ्रम किसलिए। सूर्य अच्छी तरह प्रकाशित होते समय मूल्य हीन दीप हजार क्यों? आत्मा में श्री वेंकटेश्वर की भक्ति रहते हुए अन्य भावों से क्या काम है? संपदाओं को प्रदान करनेवाली चिंतामणि हाथ में रहते हुए सीसा की बूंद किसलिए? जीभ पर विष्णु के नाम रहते हुए हवा में जानेवाली ऊहा कथाएँ किसलिए? श्री वेंकटेश्वर स्वामी के सामने होते कोने-कोने तक हाथ पसार कर किसलिए प्रार्थना करना है?

ब्रह्म पुराण में इस प्रकार कहा गया है कि- ''महाविष्णु विज्ञानमूर्तियों, ज्ञानयोगियों को सूर्य भगवान के रूप में दर्शन देता है।'' भक्तजन सूर्यप्रभावाहन पर आरूढ़ होकर श्री मलयप्पस्वामी की शोभायात्रा निकालते समय इस प्रकार गाते है कि-

''दिनकर शत तेजुंडनु देवदेव -
तद्विनुतुडीतडु गाक वेरोकडु गलडो''

लोक में चैतन्य देकर परिरक्षित करने वाले श्रीमन्नारायण सूर्यनारायण के तेज से बढकर प्रकाशित हो रहे हैं। सूर्य के द्वारा स्तोत्रित करवाते हुए देव-देव भक्त कोटि का परिरक्षण कर रहे हैं।

''आदिदेव नमस्तुभ्यं,
प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं,
प्रभाकर नमोस्तुते।।''

हे आदिदेव! नमस्कार! हे भास्कर! मुझ पर दया करो! हे दिवाकर! तुम्हे नमस्कार! कहकर इस श्लोक को पढते हुए हर दिन सूर्य का अर्घ्य देने पर अष्टैश्वर्य, अंजलि घटित करने पर आयुरारोग्य को प्रदान करते है।

क्योंकि सूर्य भगवान 'नमस्कार प्रिय' है। ''आदित्यस्य नमस्कारं, कुर्वंतु ये दिने दिने जन्मांतर सहस्रेषु, दारिद्र्यं नोपजायते।'' हर दिन सूर्य भगवान को श्रद्धा-भक्ति से नमस्कार करेंगे तो उनको हजार जन्मों से आये दारिद्र्य दूर हो जाने का विश्वास है। आदित्य हृदय के द्वारा विदित होता है कि ये सारे विश्व सूर्य किरणों का लीला विलास है। अपनी किरणों से पालन करके तप करके वर्षित दैव है सूर्य। वे हरदिन प्रत्यक्ष रूप से हमारी आँखों के सामने साक्षात्कार देनेवाले देवता है।

सूर्य भगवान के कारण ही तीन लोकों का पालन चल रहा है। वह अमृत स्वरूप है। ऐसे अमृत स्वरूप सूर्य भगवान के वाहन पर आरूढ़ होकर श्रीनिवास सबको आशिर्वाद देता है। सूर्य हमें पुन्नाम नरकों से रक्षा करता है। सूर्य श्री महाविष्णु के दायी आँख के रूप में देदीप्यमान है। सूर्य-चंद्र श्री महाविष्णु के दो नेत्र हैं। उसी प्रकाश से हम जीवित है। सूर्य सहस्र दल कमल पर ध्यान करने के जैसे दिखाई देता है। सूर्य का उदय होना अस्त होना कुछ नहीं है।

सूर्यप्रभावाहन सेवा से हमें यह विषय ज्ञात होता है कि- मानव जब चेतनता से रहता है तभी भगवान की आराधना करनी है। क्योंकि सूर्य चेतनता का प्रतीक है। भास्कर सप्त वर्णों से प्रकाशित होता है। सारे ग्रहों को अपनी ओर आकर्षित और प्रभावित करता है। सारे ग्रहों को सूर्य उनके परिभ्रम करने के लिए प्रभावित करता है। सूर्यप्रभावाहनारूढ़ श्री वेंकटेश्वर स्वामी भी भक्तजनों के मनोभावों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सूर्य की कांति विद्युदयस्कांत की उत्पत्ति करती है। सौरमंडल के कारण शक्ति उत्पन्न होती है। भक्तजनों का विश्वास है कि- ''सूर्यप्रभावाहन पर रहे स्वामी भी भक्तजनों को ऐसी शक्ति देता है।'' सूर्य ब्रह्म है। वह सृष्टिकर्ता है। जीवन देता है। मानवों में शक्ति को, सात्विकता को बढाता है। त्रिमूर्त्यात्मक स्वरूप ही 'सूर्य' है।

हर वाहन सेवा की अपनी विशिष्टता रहती है। जिनमें गरुड, हनुमंत, चंद्रप्रभा, कल्पवृक्ष आदि वाहनों की सेवाओं के द्वारा भक्तजन विशेष आनंद, तन्मयत्व, शक्ति, निकटभाव की प्राप्ति पाते हैं। सूर्यप्रभावाहन पर आरूढ़ होकर श्री मलयप्पस्वामी एक ओर सूर्य की आराधना का प्रोत्साहन देता है तो दूसरी ओर स्वयं सूर्यनारायण के रूप में रहने की याद दिलाता है। उसी प्रकार समस्त चराचर जगत् का मूलाधार सूर्य ही है। उसी प्रकार समस्त चराचर जगत् की रक्षा करने वाला श्रीमन्नारायण ही है। ऐसे सूर्यनारायण भगवान... श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सवों में सूर्यप्रभावाहन पर आरूढ़ होकर भक्तों को दर्शन देना अत्यद्भुत है।

अक्तूबर २०२२

०१ तिरुमल श्री बालाजी का गरुडसेवा
०२ सरस्वतीपूजा, गांधी जयंती
०३ दुर्गाष्टमी
०४ महर्नवमी
०५ विजयदशमी
२४ नरक चतुर्दशी, दीपावली
२५ श्री केदारगौरीव्रत
२९ नागुलचविति

चंद्रप्रभावाहन

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - 9949872149

नवरात्रि के समानांतर तिरुमल ब्रह्मोत्सव हिंदू कैलेडंर अश्विन माह के प्रारंभ में नौ दिनों के लिए आयोजित किया जाते हैं। प्रथम दिन की शाम को अंकुरार्पण उर्वरता और बहुतायत का प्रतिनिधित्व करने के लिए बीज बोने का अनुष्ठान किया जाता है। त्योहार/उत्सव के आरंभ को चिह्नित करने के लिए प्रथम दिन का मुख्य कार्यक्रम ध्वजारोहण है। अंतिम दिन श्री वेंकटेश्वर के जन्म नक्षत्र को वैभवोपेत ढंग से मनाया जाता है। सुदर्शन चक्र को मंदिर के सरोवर में स्नान कराते हैं। उसी समय भक्तजन भी सरोवर में डुबकी लगाकर अपने आप को धन्य मानते हैं।

हर साल हजारों भक्त इस भव्य उत्सव को देखने के लिए इकट्ठा होते हैं, अनुष्ठानों में भाग लेते हैं और श्री वेंकटेश्वर स्वामी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। पूरा 9 दिवसीय महोत्सव सभी भक्तों के लिए एक यादगार अनुभव है। पूर्ण आनंद भावना को वैकुंठ प्राप्ति का अनुभव कहा जाता है। ब्रह्मोत्सव समारोह में शक्तिशाली सर्प खुद को भगवान के वाहन के रूप में बदल लेता है। ध्वजारोहण के बाद श्री मलयप्पस्वामी श्रीदेवी और भूदेवी के साथ वाहन मंडप में महाशेषवाहन पर आसीन होकर परिक्रमा केलिए निकलते है। उसके बाद उत्सवमूर्ति को रंगनायक मंडप में विश्राम के लिए ले जाते हैं। स्वामीजी जिस पहाड को नाप रहा है वह शेषाद्रि है। यही कारण है कि सात सिरों वाले शेषवाहन पर स्वामी आरोहित होकर

ब्रह्मोत्सव में भक्तजनों को दर्शन देना सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। दूसरे दिन की सुबह उत्सवमूर्ति को एक छोटे-से पांच सिरों वाले लघुशेषवाहन पर विराजित होकर भक्तजनों को दर्शन देते है। उस दिन के शाम स्वामी 'हंसवाहन' पर आरोह होते हैं। हंस पर आसीन स्वामी को देखने से ज्ञान को पा सकते है।

तीसरे दिन की सुबह सिंहवाहन सेवा की जाती है। जानवरों के राजा शेर को पशुता का प्रतीक माना जाता है। भक्तों का मानना है कि धैर्य के प्रतीक के रूप में भगवान इस वाहन पर आरूढ होकर दर्शन देते है। प्रत्येक मनुष्य को अपने पशु स्वभाव को पूरी तरह से वश में करना चाहिए। और आदिदेव को अपने सिर पर धारण करना चाहिए। उस रात भगवान अपने देवियों के साथ मोतीवितानवाहन पर विराजित होकर शोभायमान रूप में भक्तों को दर्शन देते हैं। चौथे दिन के प्रातःकाल भगवान कल्पवृक्षवाहन में भक्तों को दर्शन देते हैं। कल्पवृक्ष का हमारे पुराणों एवं इतिहासों में विशेष स्थान है। उस शाम को सर्वभूपालवाहन पर भगवान की शोभायात्रा भक्तों की आंखों के लिए एक महा भोज है। ब्रह्मोत्सव के पांचवें दिन, भगवान भक्तों को मोहिनी के रूप में दर्शन देते है। मोहिनी अवतार में स्वामी हीरे और रत्नों से जड़े एक हार को पहनते हैं और दाहिने हाथ में एक तोता रखते हैं।

भगवान का मुख्य वाहन गरुड़ है। इसलिए गरुड़ को पेरिय तिरुवड़ी (प्रधान भक्त) कहा जाता है। पांचवें दिन रात को आयोजित होने वाली इस सेवा में कुछ खास है। श्रीविल्लिपुत्तूर 'गोदादेवी' धारण की गयी फूल माला को स्वामीजी को धारण करना एक रिवाज है। मकरकांति लक्ष्मीहारम् और सहस्रनाम माला (भगवान बालाजी के विशेष गहनें) जो वर्ष के हर दिन ध्रुवबेरम मूर्ति को सजाई जाती हैं, गरुडवाहन सेवा के दिन उत्सवमूर्ति श्री मलयप्पस्वामी को सजाई जाती है। छठे दिन सुबह हनुमद्वाहन सेवा की जाती है। हनुमान भगवान राम के सर्वश्रेष्ठ भक्त हैं।

छठे दिन की रात को स्वामी गजवाहन पर आसीन होकर शोभायात्रा पर निकलते हैं। सातवें दिन सुबह श्री मलयप्पस्वामी सूर्यप्रभावाहन पर जुलूस निकालते हैं। उसी दिन शाम को भक्तों का मानना है कि स्वामी ने चंद्रप्रभा के वाहन पर आरूढ़ होकर बाहर आने पर खुद को दिवारात्रों के नेता के रूप में घोषित किया। चंद्रप्रभावाहन पर आनेवाले भगवान के प्रतीक सफेद वस्त्र, सफेद फूल और माला धारण करना विशेष है।

वेदों में भगवान नारायण का ही विराट् और परम पुरुष के रूप में वर्णन किया गया है। उसी विराट् पुरुष को कभी ब्रह्म, कभी नारायण, कभी परम पुरुष, कभी प्रजापति, तो कभी धाता-विधाता कहा गया है। विराट् पुरुष परमात्मा के मन से चन्द्रमा, नेत्रों से सूर्य, कर्ण से वायु एवं प्राण तथा मुख से अग्नि का प्रकटीकरण हुआ।

''चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षुः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।''

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार सौम्य चन्द्रमा मन का स्वामी है। मन दूषित होने पर मनुष्य के संस्कार अपवित्र हो जाता है। मानसिक तनाव से मुक्ति, मन की एकाग्रता के लिए चन्द्रमा का अनुकूल होना आवश्यक है। इसीलिए चन्द्र संबन्धित वेद में प्रभावशाली मंत्र का वर्णन है।

चन्द्र – ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्यं महते
क्षत्राय महते ज्योष्ठ्याय महते
राज्यायेन्द्रस्थेन्द्रियाया। इयममुष्य पुत्रममुष्ये
पुत्रमस्यै विश एष वोडमी राजा सोमोऽस्माकं
ब्राह्मणानां राजा।। (यजु-101-18)

चन्द्र देव को भी प्रत्यक्ष भगवान माना जाता है। चन्द्रमा सूर्य के समान धर्मशास्त्रों में प्रतिष्ठित है। चन्द्रमा को मजबूत बनाने से मानसिक शांति का अनुभव होने के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक पक्ष को भी बल मिलता है।

किंवदंती के अनुसार चन्द्र या चन्द्रमा पौधों सहित जीवित प्राणियों के बीच औषधीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए है। 'पुरुषोत्तम प्रतिज्ञागम' की पौराणिक लिपियों में भगवान विष्णु वास्तुकार के रूप में वर्णन किया गया हैं। भगवान मलयप्पस्वामी को चार माडावीथियों में चन्द्रप्रभा वाहन पर विराजित होकर भक्तों को एक शांत और सुखदायक अनुभव देते हुए देखना एक अद्भुत दृश्य होता है।

चन्द्रमा सुख और शीतलता देता है। यही कारण है कि स्वामी चन्द्रप्रभावाहन का आनंद लेते हैं। इसलिए अन्नमय्या ने इस पर वर्णन किया है-

'चन्द्रप्रभावाहनंपै ऊरेगिन स्वामिवारु'

उत्सव के सातवें दिन भगवान सूर्यप्रभावाहन पर प्रकट होते हैं, उसी दिन रात में चन्द्रप्रभावाहन पर, उन्होंने भक्तों का मनोरंजन करते हैं। स्वामी ने सूर्य और चन्द्रमा के वाहनों में आगे बढ़कर साबित कर दिया है कि वे दोनों उनके लिए दो आंखों की तरह हैं श्वेतवस्त्र और फूलों की माला पहनकर स्वामी चन्द्रप्रभावाहन पर सवार होते हैं। इन वाहनों के माध्यम से सूर्य का तेज और चन्द्रमा की शीतलता दोनों ही उसके पहलू हैं। भगवद्गीता में 'नक्षत्राणां अहं शशी' (मैं नक्षत्र में चन्द्रमा हूँ) का भी उल्लेख है क्योंकि भगवान ने स्वयं को चन्द्रमा के लिए संदर्भित किया था। चन्द्रप्रभावाहन यह दर्शाता है कि इसके दर्शन से भक्तों को शारीरिक और मानसिक चिंताओं से राहत मिलेगी। चक्रायुध भरे गहनों के साथ 'वेन्नमुद्दकृष्णुडु'- हाथ में छाछ को पकडकर नन्हा कृष्ण के रूप में जुलूस के देवता, फूलों से सजे चन्द्रप्रभावाहन में भक्तों को मंत्रमुग्ध करता है।

''पुष्णामि चौषधीः सोमो भूत्वा रसात्मकः''

चन्द्रमा के रूप में भगवान औषधि का पोषण कर रहा है। चन्द्रमा भगवान शिव के लिए शिरोभूषण। भक्तों की यह गहरी मान्यता है कि चन्द्रप्रभावाहन के दर्शन से आध्यात्मिक, शारीरिक और दैवीय समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

सोमा की उत्पत्ति का पता हिंदू वैदिक ग्रंथों में लगाया गया है, जहाँ वह इसी नाम के पौधे से बने पेय का अवतार है। विद्वानों का कहना है कि वैदिक सभ्यता में पौधों की महत्वपूर्ण भूमिका थी और इस प्रकार देवता-देवताओं के सबसे महत्वपूर्ण देवताओं में से एक थे। इन वैदिक ग्रंथों में सोम को पौधों और वनों के स्वामी के रूप में स्तुति की गई हैं; नदियों और पृथ्वी का राजा, और देवताओं के पिता। ऋग्वेद का पूरा मंडल 9 पौधे और देवता दोनों, सोम को समर्पित है। वैदिक ग्रंथों में सोम की चन्द्र देवता के रूप में पहचान किया गया है। भक्त अपार धन और अच्छे स्वास्थ्य के लिए चन्द्रदेव को प्रसन्न करते हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार चन्द्रदेव महर्षि अत्रि और अनसूया के पुत्र है। इनको सर्वमय कहा गया है। यह सोलह कलाओं से युक्त हैं। प्रजापति ब्रह्म ने चन्द्र देवता को बीज औषधि जल तथा ब्राह्मणों का राजा बनाया। चन्द्रदेव शुभ, सौम्य और शांत ग्रह माने गये हैं। जो पृथ्वी पर अमृत वर्षा करके सभी को दीर्घायु और आरोग्य प्रदान करते हैं। परंतु अशुभ होने पर प्रतिकूल प्रभाव भी देते है।

ब्रह्मोत्सव के सातवें दिन रात, भगवान जी चन्द्रप्रभा वाहन पर दिव्य मंगल रूप में भक्तों के सामने प्रकट होता है। हम जानते है कि चांद के पूरा होने पर कुमुद खिलता है। चन्द्रोदय के समय समुद्र झाग से भर जाता है और आनंद से फूल जाता है। चन्द्रमा को देखने से मन निर्मल और प्रसन्न होता है। इसलिए तिरुमलेश मलयप्पस्वामी अपने भक्तों को प्रसन्न करने के लिए शीतल चांदनी में प्रकट होते हैं।

स्वामी ने चन्द्रप्रभावाहन पर आने पर खुद को दिवारात्रों के नेता के रूप में प्रकट किया है। स्वामी के द्वारा सफेद वस्त्र सफेद फूल और माला धारण करना विशेष होता है। तिरुमलेश अपने भक्तों को प्रसन्न करने के लिए शीतल चांदनी में प्रकट होते हैं।

ॐ नमो वेंकटेशाय।

जीयंगार व्यवस्था का आविर्भाव

- श्रीमती सुधा रंगराजन
मोबाइल - 9390870707

तिरुमल तिरुपति आलय में प्रतिदिन हज़ारों भक्तों की भीड़ रहती है। भक्तजन सदा 'गोविंद' नाम स्मरण करता है। चारों तरफ़ से ''गोविन्दा... गोविन्दा...'' का शब्द कानों में गूँजता है। संकट एवं विपदा से मुक्ति पाने का एक मात्र उपाय 'गोविंद नाम' का स्मरण है। सप्तगिरि भगवान की महिमा अपरंपार है। सदियों से इसकी प्रसिद्धि बढ़ती जा रही है और वर्तमान में प्रसिद्धि ने शिखर को छू लिया। तिरुमल तिरुपति अगर श्रीवैष्णव का धार्मिक स्थल है, तो इसका एक मात्र कारण भगवद् श्री रामानुज के द्वारा स्थापित सिद्धांत के अनुसार धार्मिक प्रशासन की त्रुटीरहित व्यवस्था है।

भगवद् रामानुज, भाष्यकार, उडयवर, यतिराज, ऐम्पेरुमानार के नाम से भी जाने जाते है। स्वामी धार्मिक प्रशासन के एक निर्धारित सिद्धांत को स्थापित करने में सहायक थे। उन के सिद्धांतों का पालन अब तक किया जा रहा है। भगवद् रामानुज जी ने शास्त्रों के अनुसार किए जाने वाले समारोहों और अनुष्ठानों को संस्थागत रूप दिया और आलय-पूजाविधि में एकीकृत किया।

जीयंगार एक व्यक्ति नहीं हैं, स्वयं श्री रामानुज द्वारा स्थापित एक संस्था है। जीयंगार पद में रहे आचार्य स्वामी के सिद्धांतों के अनुसार अनुष्ठानों के संचालन का पर्यवेक्षण करते हैं। इस पद्धति का आरंभ स्वयं स्वामीजी ने किया।

मंदिर में प्रतिदिन, प्रति सप्ताह, पक्ष, मासिक और वार्षिक के आधार पर कई उत्सव मनाएँ जाते है, जिन्हें वारोत्सव, पक्षोत्सव, मासोत्सव और संवत्सरोत्सव कहा जाता है। इन उत्सवों के संचालन करने के लिए, जीयंगार व्यवस्था को संस्थागत रूप दिया गया। तिरुपति में पेद्द (बडा) जीयंगार मठ की स्थापना स्वयं भगवद् रामानुज ने वर्ष 1057 में की थी, और 'श्री तिरुवेंकट रामानुज पेद्द जीयंगार' को धार्मिक-प्रथाओं का पर्यवेक्षण करने वाले, पहले मठाधिपती की दीक्षा दी गयी। कई वर्षों के पश्चात, चिन्न (छोटा) जीयंगार मठ की भी स्थापना की गयी, और एक जीयंगार को पदाधिकारी बनाया गया। चिन्न जीयंगार, पेद्द जीयंगार को कैंकर्य के (सेवा) वारिस माने जाते हैं। आज परम पूज्य 'श्री पेरिय कोविल केल्वि अप्पन श्री शटकोप रामानुज जीयर' पेद्द जीयर के रूप में कैंकर्य कर रहे है। स्वयं श्री रामानुज स्वामी ने तीन बार तिरुमल तिरुपति

की यात्रा करके, आलय कार्यों का पर्यवेक्षण किया। पहली बार जब वे पधारे, उन्होंने भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी को शंख-चक्र समर्पित किया। उनकी दूसरी यात्रा पर चारों माडावीथियों की सड़कों का विकास किया और मंदिर के नवाचार का मानकीकरण किया। तीसरी बार जब पधारे, उन्होंने तिरुपति के श्री गोविन्दराज भगवान की मूर्ति की प्रतिष्ठा की है।

जीयंगार आलय आचार विधियों के धर्मकर्ता माने जाते है। इन्हें द्रविड़ वेद के निरीक्षण करने का अधिकार भी है। जीयंगार द्रविड़ वेद नालायिर दिव्यप्रबंध (12 आल्वारों के द्वारा रचित छंदों) का पाठ करते हैं। रामानुज जयन्ती प्रतिवर्ष चैत्र/वैशाख मास में आरुद्रा नक्षत्र पर ''श्री भाष्यकार्ल उत्सव'' के रूप में मनाया जाता है। यह उत्सव 10 दिन तक मनाया जाता है। विशेष अवसर पर आलय में भगवद् रामानुज को सफ़ेद धोती और आभूषणों से सजाया जाता है। इसे 'वेल्लै सात्तुपड़ि' उत्सव कहते है। जीयंगार अध्ययनोत्सव आयोजित करते है जो वैकुंठ एकादशी से 11 दिन पहले मनाया जाता है। 1253, 1360 और 1446 के शिलालेखों के अनुसार तिरुमंगैयाल्वार, श्री नाथमुनि और भगवद् श्री रामानुज द्वारा तिरुमल वार्षिक उत्सवों का प्रारम्भ किया गया है।

इस उत्सव में तिरुमल के रंगनायक मंडप में 25 दिनों तक 4000 दिव्यप्रबंधों के सभी विछंदों का पाठ किया जाता है। 14 दिनों के पहले चरण को ''पगलपत्तु'' और अगले चरणों को ''राप्पत्तु'' कहते हैं। यह उत्सव सभी श्रीवैष्णव क्षेत्र में मनाया जाता है। तिरुमल की विशेषता इस उत्सव के अतिरिक्त 22वाँ दिन 'कंनिनुं सिरुत्तांबु', 23वाँ दिन 'रामानुज नूट्रन्दादी', 24वाँ दिन 'वराहस्वामी सात्तुमुरै' और 25वाँ दिन 'श्री तिरुमलै नम्बि के तीर्थ कैंकर्य' की स्मृति में 'तंनीर अमुदू' आदि उत्सव श्री जीयंगार के नेतृत्व में मनाए जाते हैं।

प्रतिदिन तिरुमल में पेद्द एवं चिन्न जीयंगार मठ में आनेवाले भक्तों को अन्नप्रसाद का भाग्य मिलता है। भक्तों को आश्रय प्रधान करना, भोजन उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण दायित्व जीयंगार मठ का है।

सदियों से श्रीवैष्णव सम्प्रदाय का आचरण करना ही जीयंगार व्यवस्था की विधिपूर्वक पद्धति है।

।।श्रीमते रामानुजाय नमः।।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2022 सितंबर 27 से अक्तूबर 05 तक

28-09-2022
बुधवार
रात
हंसवाहन

28-09-2022
बुधवार
दिन
लघुशेषवाहन

29-09-2022
गुरुवार
रात
मोतीवितानवाहन

29-09-2022
गुरुवार
दिन
सिंहवाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2022 सितंबर 27 से अक्तूबर 05 तक

30-09-2022 शुक्रवार
दिन : कल्पवृक्षवाहन

30-09-2022
शुक्रवार
रात
सर्वभूपालवाहन

01-10-2022
शनिवार
रात : गरुडसेवा

01-10-2022 शनिवार
दिन : पालकी में आरूढ़
मोहिनी अवतारोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2022 सितंबर 27 से अक्तूबर 05 तक

02-10-2022
रविवार
रात : गजवाहन

02-10-2022
रविवार
दिन
हनुमन्तवाहन

03-10-2022 सोमवार
दिन : सूर्यप्रभावाहन

03-10-2022
सोमवार
रात : चंद्रप्रभावाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2022 सितंबर 27 से अक्तूबर 05 तक

मानव, समाज और संस्कृति का अन्योन्याश्रित है। मानव समाज की इकाई है और समाज संस्कृति का आधारभूत तत्व है। समाज में मानव को अपना जीवन व्यतीत करने के लिए भोजन और आवास की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद शरीर की रक्षा के लिए वस्त्र की आवश्यकता होती है। वस्त्र पहनने से मनुष्य के शील की रक्षा होती है। इसके अलावा ठंड, वायु, उष्णता, वर्षा आदि से भी शरीर की रक्षा होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी वस्त्रों का महत्व है। मनुष्य अपने स्वभाव के अनुसार वस्त्र चुनता है। साधारणतः जो लोग सदैव व्यवस्थित और इस्त्री किये हुए वस्त्र पहनते हैं, वे अनुशासनप्रिय एवं परिपूर्ण स्वभाव के होते हैं। जो सदैव अनौपचारिक और सुखदायक वस्त्र पहनते हैं, वे मिलनसार एवं स्वच्छन्द स्वभाव के होते हैं। जो लोग हमेशा अस्त-व्यस्त और विचित्र वस्त्र पहनते हैं, वे स्वभाव से आलसी एवं असावधानी होते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि वस्त्र मनुष्य के स्वभाव और व्यक्तित्व का परिचायक होता है। अतः मनुष्य के लिए व्यावहारिक जीवन में विशिष्ट संदर्भ में पूर्ण वस्त्र धारण करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए नौकरी के साक्षात्कार के लिए जाते समय व्यवस्थित एवं इस्त्री किये हुए वस्त्र पहनकर जाने से मनुष्य की अनुशासनप्रियता और नम्रता जैसे गुण प्रदर्शित होते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी वस्त्रों का अपना महत्व है। हिंदू धर्म में स्त्री एवं पुरुष द्वारा धारण किये जानेवाले वस्त्रों की रचना देवताओं ने की है। इसीलिए ये वस्त्र शिव एवं शक्ति तत्व प्रकट करते हैं स्त्रियों के वस्त्र अर्थात् साडी से शक्ति तत्व जागृत होता है और पुरुषों के वस्त्रों से शिवतत्व जागृत होता है। शास्त्रानुसार वस्त्र धारण करने से हमें अपने वास्तविक स्वरूप का परिचय मिलता है। इसके साथ-साथ हमारी आध्यात्मिक शक्ति का नष्ट नहीं होता है। देवताओं द्वारा निर्मित वस्त्र धारण करने से स्थूलदेह एवं मनोदेह के लिए आवश्यक शक्ति अपने आप मिलती है।

भगवान श्री वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए उपयुक्त सांप्रदायिक वस्त्र

- डॉ.जी.मोहन नायुडु
मोबाइल - 9441480473

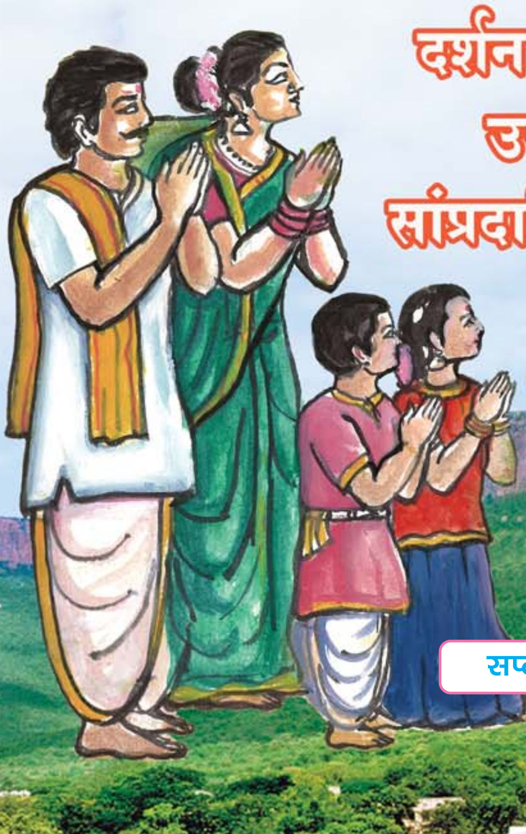

हिंदू धर्म में निर्धारित पुरुषों और महिलाओं के द्वारा धारण किये जानेवाले कपडे देवताओं द्वारा रचे गये हैं जो शिव और शक्ति सिद्धान्तों को प्रकट करते हैं। शास्त्रों के द्वारा बताए गये कपडे पहनने से हमेशा अपनी असली पहचान का अनुभव होता है। इससे हमारी आध्यात्मिक ऊर्जा की भी रक्षा होती है। देवताओं के द्वारा रचित कपडे पहनने से भौतिक और मानसिक शरीर के लिए आवश्यक ऊर्जा स्वतः ही प्राप्त हो जाती है। हिंदू धर्म के अनुसार वस्त्र धारण करने से ईश्वरीय चेतना और देवताओं के तत्वों से परिचय मिलता है। इसके दो उदाहरण हम ले सकते हैं -

कुर्ता एवं पायजामा :

कुर्ता एवं पायजामा पहनने से शरीर के चारों ओर दीर्घवृत्ताकार (दीप की ज्योति समान) कवच निर्मित होता है इससे जीव के लिए वायुमंडल से ईश्वरीय चैतन्य ग्रहण करना सुलभ होता है। साथ ही रज और तम पर विजय पाना भी सुलभ होता है।

रेशमी धोती :

कुर्ता एवं पायजामा की अपेक्षा रेशमी धोती अधिक सात्विक है। इसे धारण करने से देह के सभी ओर सूक्ष्म गोलाकार कवच निर्मित होती है। इससे जीव के लिए देवता के तारक-मारक एवं सगुण एवं निर्गुण, दोनों तत्व ग्रहण करना सुलभ हो जाता है। हिंदू धर्म में बताये गये के अनुसार वस्त्र धारण करने से अनिष्ट शक्तियों से रक्षा मिलती है।

साडी की चुन्नट से शक्ति प्रवाह भूमि की दिशा में प्रक्षेपित होने पर पाताल की अनिष्ट शक्तियों से स्त्रियों की रक्षा होती है। साडी द्वारा प्रक्षेपित शक्ति तत्व का वायुमंडल की अनिष्ट शक्तियों से अनायास ही युद्ध होता है। इससे व्यक्ति के मन और बुद्धि पर अनिष्ट शक्ति का प्रभाव घटता है। साडी की प्रत्येक चुन्नट से प्रक्षेपित शुभप्रकाश का स्रोत तलवार जैसा होता है। चुन्नट से शक्तिप्रवाह भूमि की दिशा में प्रक्षेपित होता

है। अतः पाताल(नरक) की अनिष्ट शक्तियों से भी स्त्री की रक्षा होती है।

तिरुमल दर्शन के वस्त्र :

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के नियमानुसार पहले कल्याणोत्सव और अन्य अर्जित सेवा दर्शन के लिए परंपरागत वस्त्रों का नियम अमल में था। लेकिन आजकल ऑनलाइन टिकटों के भक्त भी इन परंपरागत वस्त्र धारण करके भगवान श्री वेंकटेश्वर(बालाजी) का दर्शन करना अनिवार्य है, जो इस प्रकार है -

पुरुष : धोती, कुर्ता, उत्तरीय, पायजामा।

महिलाएँ : साडी, चोली, लहंगा, ओढनी, पंजाबी, घाघरा।

भक्तों की वेशभूषा हमेशा सरल, स्वच्छ एवं दूसरों को भगवान श्री वेंकटेश्वर का स्मरण दिलानेवाली होनी चाहिए। मुख्य रूप से प्रातःकालीन कल्याणोत्सव और अन्य अर्जित सेवाओं में उपर्युक्त वस्त्रों का धारण करना अनिवार्य है। इन वस्त्रों के धारण करने से भक्तों के मन में आध्यात्मिकता और स्वच्छता की भावना का विकास होता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इन वस्त्रों का अपना महत्व है। भगवान श्री वेंकटेश्वर विष्णु का अवतार है। धोती भगवान विष्णु का स्वरूप है। यज्ञ या धार्मिक अनुष्ठान में धोती के

धारण करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं। भक्तों के समस्त कार्य सिद्ध होते हैं। धोती भारतीय परंपरा का प्रतीक है। इसे धारण करने से मन शुद्ध होता है और सुविचार मन को पवित्र करने लगते हैं। धोती संपूर्ण हिंदू समुदाय में अपने विभिन्न नामों तथा पहनने के ढंग के कारण काफी व्यापक है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत और दक्षिण भारत की पहनने की शैली अलग है। धोती को तेलुगु में 'पंचे' कहते हैं। इसी प्रकार महिलाएँ साडी पहनती हैं। साडी पहनने से उत्पन्न होनेवाले गुण और लाभ निम्नांकित हैं-

नम्रता का भाव, विनय भाव, चित्त की स्थिरता और चित्त की एकाग्रता में वृद्धि, आत्मविश्वास में वृद्धि, एक योद्धा की मनोवृत्ति, मातृ भावनाओं का जागरण, यह भी महसूस होता है कि एक साडी एक देवता का प्रतीक है। साडी पहनने से आध्यात्मिक उपचार होता है। इस प्रकार उपयुक्त वस्त्र धारण से शरीर के चारों ओर व्याप्त कष्टदायक शक्ति और अनिष्ट शक्तियों के कारण होनेवाले कष्टों को दूर कर सकते हैं। इस प्रकार निर्मल और शुद्ध वस्त्र धारण करने से भगवान श्री वेंकटेश्वर(बालाजी) की कृपा भी अनायास ही प्राप्त होती है।

नंदलाल

पल्लवी

नंद-यशोद नंदलाल
मुकुंद सुंदर नंदलाल
आनंद कीर्तन नंदलाल परम
आनंद नर्तन नंदलाल

चरण

(भव) बंधन को थोडा भूल जाएँ... दीन
बंधु के स्मरण में लग जाएँ... मन
मंदिर में नंद को बंदी करें... उसे
बृंदावन बनाके नाच लें

गोविंदा की छवि बार-बार देखे... अर
विंदं के प्यार में डूब जाएँ...
छंद शोभित इक वृंद गीत गाएँ
नंदन की वर वाणी सुनें...

- श्रीमती आर.वाणिश्री

‘श्रीवारि सेवा’ - अनंत आनंद के लिए गंतव्य

अंग्रेजी मूल -
कुमारी पी.नीलिमा
अनुवादक -
श्रीमती सी.मंजुला
मोबाइल -
9966138444

हिन्दू शास्त्रों में, सेवा को धर्म (धार्मिकता) के उच्चतम रूप में देखा जाता है। सेवा की अवधारणा सेवा को हिन्दू सनातन धर्म के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक माना जाता है।

बदले में कुछ भी मांगे बिना अन्य लोगों की सेवा करना परोक्ष रूप से सर्वोच्च भगवान की सेवा करने का एक आवश्यक भक्ति माना जाता है। दूसरे शब्दों में, सेवा को केवल ‘निःस्वार्थ अधिनियम’ के रूप में परिभाषित किया गया है जो सेवा किसी पारस्परिकता, मौद्रिक लाभ, पुरस्कार या पुरस्कार की उम्मीद के बिना किया जाता है।

श्रीवारि सेवा की उत्पत्ति :

श्री वेंकटेश्वर के पवित्र मंदिर में हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। ‘श्रीवारु’ माने बालाजी भगवान है। भगवान जी की झलक पाने के लिए भक्तों को तिरुमल मंदिर में ५ कि.मी. तक लंबी-लंबी कतारों में प्रतीक्षा करना पडता है। दर्शन कतारों के अलावा, तिरुमल में आवास, कल्याणकट्टा, अन्नप्रसाद, लड्डू कांप्लेक्स, लगेज काऊँटर और हर जगह भक्तों की भारी आमद देखी जाती है।

तिरुमल में तीर्थयात्रियों की बढ़ती भीड़ की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, ति.ति.दे. ने सन् १९९८ में भक्तों को सेवाएँ प्रदान करने के विचार के दौरान ‘‘श्रीनिवास सेवा’’ का प्रतिपादन किया है।

बाद में वर्ष २००० के दौरान नवंबर में ‘‘श्रीवारि सेवा’’ शुरू की गई थी। श्रीवारि सेवा को केवल २००

संख्या के साथ शुरू किया। आज प्रति दिन कम से कम २००० से अधिक सेवक तिरुमल में अपने साथी तीर्थयात्रियों की सेवा कर रहे हैं। गर्मी की छुट्टियाँ, वार्षिक ब्रह्मोत्सव, वैकुंठ एकादशी, रथसप्तमी आदि जैसे विशेष दिनों के दौरान यह आंकडा दो गुणा हो जाता है।

स्वयंसेवकों की श्रीवारि सेवक दल न केवल आन्ध्रप्रदेश और तेलंगाना से है, बल्कि तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, नई दिल्ली और छत्तीसगढ से भी है। इसकी स्थापना के बाद से, अब तक ९५ हजार विषम टीमों के १२.५० लाख श्रीवारि सेवकों (जून २०२२ तक) ने पिछले २२ वर्षों में ८.६० लाख महिलाओं और ३.९० लाख श्रीवारि सेवकों ने अपने साथी तीर्थयात्रियों को त्रुटिहीन सेवाएँ प्रदान की है।

एक छोटे से कक्ष से १०० करोड बड़े भवनों तक का सफर :

प्रारंभ में श्रीवारि सेवा कार्यालय तिरुमल में एक छोटे से कक्ष में हुआ करता था। समय के साथ-साथ श्रीवारि सेवा ने अपनी पिछले दो दशकों की यात्रा में काफी परिवर्तन देखा है।

तिरुमल में श्रीवारि सेवकों के महत्व को ध्यान में रखते हुए ति.ति.दे. ने महिला और पुरुष स्वयं सेवकों दोनों केलिए अलग-अलग सुसज्जित आवास और अन्य सुविधाओं के साथ अलग-अलग समयोजित करने हेतु १०० करोड रुपयों में विशेष जुडवां भवनों का निर्माण किया है, जो कि श्री वराह स्वामी विश्राम गृह के सामने और कल्याण मंच के पीछे स्थित हैं।

मानव सेवा ही ईश्वर की सेवा है :

''मानव सेवा ही माधव सेवा'' - मानवता की सेवा ही देवत्व की सेवा है, यह हिन्दू धर्मग्रंथों में एक प्रसिद्ध कहावत है। इस महान विचारधारा से चिपके हुए ति.ति.दे. ने श्रीवारि सेवा को स्वैच्छिक सेवा के रूप में शुरू किया। पिछले २२ वर्षों में, देशभर से विभिन्न स्थानों और यहाँ तक कि विदेशों से आए लग भग १२.५० लाख श्रीवारि सेवकों ने अपने साथी तीर्थयात्रियों की त्रुटिहीन सेवाएँ की हैं। इस आंकडे के अनुसार ८.६० लाख महिलाएँ एवं ३.९० लाख पुरुष स्वयंसेवक शामिल थे।

ड्रेसकोड :

महिला स्वयंसेवकों के लिए :

गाढ़ा भूरा रंग कि पतली पट्टी वाली नारंगी साडी और भूरे रंग कि चोली (या) नारंगी रंग का कुर्ता के साथ भूरे रंग दुपट्टा एवं पायजामा।

पुरुष स्वयंसेवकों के लिए :

सफेद शर्ट के साथ सफेद पैंट या धोती।

श्रीवारि सेवकों के लिए निर्देश :

१) केवल हिन्दु धर्मावलंबी ही श्रीवारि सेवा के लिए आवेदन कर सकते हैं।

२) श्रीवारि सेवा बिल्कुल मुफ्त सेवा है। जिसका उद्धेश्य साथी तीर्थयात्रियों की सेवा करना है।

३) सेवकों को अंतिम सेवा प्रदर्शन तिथि से ९० दिनों के बाद फिर से सामान्य सेवा / परकामणी सेवा / नवनीत सेवा के लिए बुकिंग करने की अनुमति दी जाएगी।

४) सामान्य सेवा का लाभ उठाने के लिए, श्रीवारि सेवा करने के इच्छुक भक्तों को या तो ऑनलाइन या ऑफलाइन में आवेदन करना होगा।

५) सामान्य सेवा के लिए आयु की सीमा १८-६० वर्ष है।

६) एक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से ऑनलाइन में मात्र ही बुकिंग करने साधारण श्रीवारि सेवा की पेशकश कर सकते है।

७) एक समूह के लिए न्यूनतम संख्या १० और अधिकतम १५ है, जिसे ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों में बुक किया जा सकता है।

ऑफलाइन में :

सेवक जो श्रीवारि सेवा करना चाहते हैं, उन्हें निम्नलिखित पते पर एक पत्र लिखना होगा।

पता :

जनसंपर्क अधिकारी,
टी.टी.डी.प्रशासनिक भवन, कमरा संख्या-60,
के.टी.रोड, तिरुपति - 517 501.
तिरुपति जिला, आंध्रप्रदेश.
फोन : 0877- 2264217.

चयनित श्रीवारि सेवकों को जनसंपर्क अधिकारी के कार्यालय, तिरुपति से कार्यवाही की एक प्रति प्राप्त होगी; उन्हें श्रीवारि सेवा के लिए आमंत्रित करेंगे और उनके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एक एस.एम.एस. भी भेजा जाएगा।

ऑनलाइन आवेदन कैसे करे :

१) केवल हिन्दुओं को श्रीवारि सेवा के लिए आवेदन करना होगा।

२) श्रीवारि सेवा का लाभ उठाने के लिए, श्रीवारि सेवा वेबसाइट srivariseva.tirumala.org के माध्यम से ऑनलाइन पंजीकरण करना होगा। (ऑनलाइन आवेदन करने के निर्देश और प्रक्रिया टी.टी.डी. अधिकारिक वेबसाइट में उपलब्ध हैं)

३) साधारण श्रीवारि सेवा को आवेदन करने की आयु (व्यक्तिगत या समूह के रूप में) ७ दिन की अवधि सेवा केलिए १८ से ६० वर्ष होना है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के सहायक के रूप में श्रीवारि सेवा :

ति.ति.दे. के विभिन्न क्षेत्र जैसे - सतर्कता, स्वास्थ्य, अन्नप्रसाद, उद्यान, चिकित्सा, लड्डू प्रसाद, श्रीवारि मंदिर, परिवहन एवं कल्याणकट्टा आदि स्थानों पर श्रीवारि सेवक अपनी सेवाओं को प्रदान कर रहे हैं। बुक स्टॉल और अगरबत्ती-पंचगव्य की बिक्री जबकि पेशेवर सेवाओं में परकामणी और नवनीत सेवा भी शामिल हैं।

कुछ स्थान जहाँ श्रीवारि सेवक सेवाएँ प्रदान करते है :

१) कतार लाइनें, कांप्लेक्सों में भक्तों की भीड को नियंत्रित करने के लिए।

२) पीने का पानी, छाँछ, नाश्ता, दूध, वैकुंठम क्यू कांप्लेक्सों में अन्नप्रसाद वितरण, नारायणगिरि गार्डन शेड, कतार के बाहर भोजन काउंटर आदि स्थल पर परोसने के लिए।

३) मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसाद कांप्लेक्स (एम.टी.वी.ए.एसी.), पी.ए.सी.-II में सेवा।

४) भक्तों के सामान की स्कैनिंग।

५) उद्यान विभाग में फूलों को तोड़ना और माला तैयार करना।

६) धार्मिक पुस्तकों की बिक्री, ति.ति.दे. कैलेंडर और डायरी, पंचगव्य, सूखे फूल प्रौद्योगिकी फोटो फ्रेम, अगरबत्ती की बिक्री।

७) दर्शन की कतार में वृद्ध और विकलांग भक्तों की सहायता करना और अस्पताल।

८) नारियल और बयो-डिग्रेडबल थैलियों की बिक्री।

९) लड्डू प्रसाद और अन्नप्रसाद बनाने के लिए काजू का बंटवारा।

१०) व्यवस्था की बेहतरी के लिए भक्तों से फीडबैक प्राप्त करना।

पेशेवर सेवा :

सामान्य सेवाओं के अलावा ति.ति.दे. ने परकामणी और नवनीत सेवा भी शुरू की है।

परकामणी सेवा :

'परकामणी' श्रीवारि हुंडी में भक्तों द्वारा दी जाने वाली मुद्राओं और सिक्कों की गिनती और लेखांकन है। परकामणी सेवा ति.ति.दे. द्वारा अगस्त २०१२ में शुरू की गई थी। केवल २५ वर्ष से ६५ वर्ष की आयु के पुरुष सेवक मात्र ही परकामणी सेवा के लिए आवेदन करने के योग्य हैं।

नवनीत सेवा :

गोमाता-गाय की सेवा करने के उद्धेश्य से, हिन्दू सनातन धर्म और शास्त्रों में वर्णित पारंपरिक प्रथाओं के अनुसार नवनीत सेवा को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर एस.वी.गोशाला, तिरुमल में २०२१ को, ति.ति.दे. द्वारा आरंभ की गई थी।

इस अनूठी सेवा में गोशाला परिसर की सफाई, रंगोली बनाना, ईंधन सामग्री के रूप में उपयोग करने के लिए गाय के गोबर से बनाये गये गौ उपले शामिल है। गायों को चारा खिलाना, पारंपरिक तरीकों से मक्खन मथना आदि।

नवनीत सेवा प्रदान करने के इच्छुक भक्तों को केवल ऑनलाइन में आवेदन करना होगा। केवल ३५ वर्ष से ५० वर्ष की आयु की महिला सेवक ही नवनीत सेवा के लिए आवेदन करने के लिए योग्य हैं।

तिरुपति में श्रीवारि सेवा :

तिरुमल में श्रीवारि सेवा की सफल यात्रा के बाद, वही सेवाएँ तिरुपति में भी वर्ष २०१४ में शुरू की गई थी। श्रीवारि सेवकों की सेवाओं का उपयोग तिरुपति, तिरुचानूर के स्थानीय मंदिरों में भी किया जा रहा है। श्रीनिवासमंगापुरम्, अप्पलायगुंटा, केन्द्रीय अस्पताल, डी.पी.डब्ल्यू स्टोर्स, मार्केटिंग गोदाम, एस.वी.गोशाला, ति.ति.दे. के विश्राम गृह एवं अन्नप्रसाद आदि।

महिला और पुरुष स्वयं सेवकों को रेल्वे स्टेशन के सामने स्थित विष्णु निवास, तिरुपति में आवास प्रदान किया जा रहा है।

श्रीवारि सेवकों के लिए भजन एवं सत्संग :

श्रीवारि सेवकों को प्रशिक्षण प्रदान करके उनके बीच सेवा अभिविन्यास, धार्मिक प्रेरणा को आत्मसात करना है।

तिरुमल में सेवा सदन-२ में सुबह और शाम दोनों समय क्या करे और क्या न करे पर उन्मुखी करण के साथ-साथ श्रीवारि सेवकों के लिए प्रतिदिन भजन और सत्संग कक्षाएँ संचालित की जा रही हैं।

इसी तरह, प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार के दौरान, तिरुपति, विष्णु निवास में सेवकों के लिए भजन और सत्संग कक्षाएँ आयोजित की जाएगी।

हिन्दु सनातन धर्म के मशाल वाहक :

तिरुमल और तिरुपति में विभिन्न सेवाएँ प्रदान करने के अलावा, श्रीवारि सेवक स्वेच्छा से विभिन्न कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में ति.ति.दे. द्वारा आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों पर विचार किया गया।

चाहे वह विशाखपट्टणम, भुवनेश्वर, अमरावती में श्री वेंकटेश्वर दिव्य क्षेत्र का उद्घाटन हो या ति.ति.दे. द्वारा शुरू किए गए कार्तिक दीपोत्सव, वेंकटेश्वर वैभवोत्सव, श्रीनिवास कल्याण आदि जैसे धार्मिक कार्यक्रम हो, हर जगह श्रीवारि सेवक भक्तों को सेवाएँ समर्पित करते है। जिससे वे ''हिन्दू सनातन धर्म के मशाल वाहक'' के रूप में कार्य कर रहे हैं।

पुरा-कथाओं के प्रमुख वक्ता सूत ने शौनकादि महर्षियों से इस प्रकार बताया था कि- ''हे मुनिश्रेष्ठ! इस दुनिया में लोग गरीबी से पीडित हैं। उनकी दरिद्रता को दूर करने का एक श्रेष्ठ व्रत है। मैं आप को उस व्रत के बारे में बताऊँगा, सुनिए।''

द्वापरयुग में पांडुराज का पुत्र युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ वनवास करते समय अनेक कष्टों को झेलते हुए श्रीकृष्ण से कहा था-- ''हे महात्मा! मैंने अनेक दिनों से भाईयों के साथ मिलकर वन वास करते हुए कई कष्टों को झेला है। उन से मुक्त होने का कोई उपाय होतो बताइए।'' तब श्रीकृष्ण ने ऐसा कहा।

''हे धर्मराजा! स्त्री-पुरुषों को सभी पापों से मुक्त करके कार्यसिद्धि प्रदान करानेवाला एक व्रत है। उस व्रत का नाम 'अनंत पद्मनाभ व्रत' है। उस व्रत को भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्दशी के दिन रखना चाहिए। यदि आप ऐसा करते है, तो सारे कष्ट दूर होकर विशेष कार्यसिद्धि के साथ-साथ पुत्र संतान की प्राप्ति भी होगी।'' उस पर धर्मराज ने ऐसा कहा-

''हे रुक्मिणी प्राण वल्लभ! उस अनंत पद्मनाभ व्रत के देवता कौन है? क्या वह आदिशेष है? या तक्षक है? या रचयिता ब्रह्म है? या परमपिता परमेश्वर का रूप है?'' ऐसा पूछा। उस पर श्रीकृष्ण ने इस प्रकार बताया।

''हे पांडुपुत्र! उस व्रत के देवता मैं ही हूँ। मेरे अलावा कोई नहीं। सूर्य गमन के कारण कालकाष्ठ मुहूर्त की तरह, दिन-रात की तरह, युग वर्ष मानस संकल्प की तरह तुम जिस तरह सोचते हो उस तरह का रूप मेरा ही है। मैं ही काल स्वरूप हूँ। अनंत के नाम पर पृथ्वी के बोझ को कम करने के लिए, राक्षसों को मारने के लिए वसुदेव के घर में मेरा जन्म हुआ। मुझे कृष्ण के रूप में, विष्णु के रूप में, हरिब्रह्म के रूप में सार्वभौमिक परमेश्वर स्वरूप के रूप में, सृष्टि, लय, स्थिति कारण भूत के रूप में, अनंत पद्मनाभ के रूप में, मत्स्य-कूर्मादि अवतार के रूप में जानना

श्री अनंत पद्मनाभ स्वामी व्रत

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी, मोबाइल - 9866060269.

चाहिए। मेरे हृदय में चौदह इंद्र, अष्ट वस, एकादश रुद्र, द्वादशादित्य, सप्तऋषियों, सारे लोक, जो वह रूप है, उस रूप को मैंने आप को बताया।।'' इस प्रकार बताने के बाद धर्मराज ने श्रीकृष्ण से ऐसा कहा - ''हे जगन्नाथ! आपने जिस अनंत व्रत का उल्लेख किया है, उसका आचरण कैसे करे? व्रत का आचरण करने से मुझे कौन-सा फल मिल सकता है? किस देव की पूजा करनी चाहिए? इसके पहले किस देवता ने इस व्रत का आचरण करके सुख प्राप्त किए?'' ऐसा पूछने के बाद श्रीकृष्ण ने इस प्रकार बताया।

हे धर्मराजा! मैं बताता हूँ, आप सुनिए। प्राचीन काल में सुमंत नाम का एक ब्राह्मण रहता था, जो वशिष्ठ गोत्र का था और वेदशास्त्रों में समृद्ध था। उन्हें भृगु महाऋषि की पुत्रिका दीक्षा देवी नाम की पत्नी थी। उसके साथ वैवाहिक जीवन बिताने के बाद वह गर्भवती हो गई और उसने एक सुन्दर लड़की को जन्म दिया। जिसका नाम सुशीला रखा गया।

कुछ दिनों के बाद तापज्वर की वजह से दीक्षा देवी की मौत हो गई। उसके बाद सुमंत ने वैदिक कर्मकांडों के डर से 'कर्कशा' नामक एक कुंवारी से दूसरी विवाह किया। वह कर्कशा बड़ा कठोर हृदय-वाली, झगडालू और कलहकारिणी थी। इस प्रकार 'शीला' जो पहली पत्नी दीक्षा देवी की बेटी थी, अपने पिता सुमंत के घर में पली-बढ़ी। दीवारों और बरामदे में चित्रवर्णों से प्रतिमाओं को सजाती थीं। सभाओं आदि जगहों में शंख-पद्मादियों की तरह रंगोली बनाते हुए दैव-भक्ति की भावना से रहती थी। ऐसा रहते हुए शीला के वयस्क होने पर, सुमंत बेटी का विवाह करने का प्रयत्न करते समय कौंडिन्य महामुनि वहाँ पधारे। कौंडिन्य महामुनि कुछ तपस्या करके उसके बाद विवाह करने की इच्छा से कई देशों में घूम-घूम कर सुमंत के घर आए। सुमंत ने कौंडिन्य महामुनि के नखपदों की पूजा की। उसके बाद एक शुभ अवसर पर अपनी बेटी का विवाह कौंडिन्य से करवाया।

इस प्रकार विवाह होने के बाद कुछ न कुछ भेंट देने केलिए निर्णय कर लेने के बाद अपनी पत्नी कर्कशा के पास जाकर ऐसा पूछा- 'हे प्रेमिका! हमारे दामाद कौंडिन्य को कुछ न कुछ उपहार देना है न? क्या दे सकते है?'' ऐसा पूछने पर कर्कशा ने बहुत तेज से कमरे के अन्दर जाकर दरवाजों को बन्द करके बताया था कि- 'यहाँ कुछ भी नहीं है। सुमंत ने कर्कशा के उस तरह व्यवहार करने पर बहुत चिंतित होकर रास्ते में खाने के लिए कुछ न कुछ न देखर भेजना उचित न समझा। शादी केलिए बनाया गया और बचाया हुआ सूत्र देकर बेटी को दामाद के साथ बिदा किया। उसके बाद सदाचार सुसंपन्न पत्नी के साथ गाडी में बैठकर आश्रम की ओर निकले। अपने आश्रम को जाते हुए मध्याह्न समय होने पर संध्यावंदनादि क्रियाओं को करने के लिए गाडी से उतरकर तालाब की ओर चले गए।

अनंत पद्मानाभ चतुर्दशी के दिन एक ऐसा स्थान था जहाँ अनेक स्त्रियाँ लाल वस्त्र धारण करके अत्यंत भक्ति के साथ अलग-अलग होकर अनंत पद्मनाभ स्वामी की पूजा कर रही थीं। कौंडिन्य की पत्नी शीला उसे देखा और धीरे-धीरे उन स्त्रियों के पास जाकर कहा, ''हे नारियों! आप किस भगवान की पूजा कर रही है? इस व्रत का नाम क्या है? मुझे विस्तार रूप से बताइए, ऐसा कहने पर उन स्त्रियों ने इस प्रकार कहा-

'हे पुण्यवती! हम बतायेंगी। सुनिए। यह तो 'अनंत पद्मनाभ व्रत' है। इस व्रत का आचरण करने से अनंत फल की प्राप्ति होती है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी के दिन नदी तट पर जाकर स्नान करके, साफ कपडे पहनकर शुद्ध गाय के गोबर से धुलाई करनी है। उसके बाद सर्वतोभद्र नाम के आठ दलों के कमल फूल की तरह क्षेत्र को बनाकर, उस क्षेत्र की चारों ओर पंचवर्ण रंगोलियों से, सफेद-चावल का आटा से अलंकृत करके नाना प्रकार की रंगोलियों को बनाकर उस मंच के दक्षिण दिशा में पानी से

भरे कलश को रखना है। सर्वव्यापक अनंत पद्मनाभ स्वामी को मंच के बीच रखकर दर्भ को लगाकर, उस में आवाहन करना चाहिए। उन्हें श्वेतदीपवास की तरह, पिंगलाक्ष की तरह, सप्तफण सहित की तरह, शंख, चक्र, गदाधर की तरह समझ कर ध्यान करना चाहिए। उसके बाद कल्पोक्त प्रकार, षोडशोपचार पूजाओं को करने के बाद, प्रदक्षिणा नमस्कार करके केसर से लथपथ हुए चौदह कांटोवाले एक नए धागे को उस पद्मनाभ स्वामी के नजदीक रखकर पूजा करनी है। पांच किलो गेहूँ के आटे से अट्ठाईस अतिरसों को बनाकर नैवेद्य रखकर वस्त्र धारण करके ब्राह्मणों को चौदह अतिरसों एवं खीर दान देकर बचे हुए पदार्थों को खुद खाना चाहिए। पूजाद्रव्य चौदह की तरह होनी चाहिए।

उसके बाद ब्राह्मण समाराधना करके अनंतपद्मनाभ स्वामी का ध्यान करना चाहिए। हे शीला! इस तरह व्रत पूरा करना चाहिए। इस प्रकार बताने के बाद कौंडिन्य की पत्नी शीला ने तुरंत स्नान किया और स्त्रियों की सहायता से व्रत किया, एक वस्त्र बाँधकर उन्हें वायदान के रूप में सत्त दी जो रास्ते में खाने के लिए लाई थी। वह खुद खाकर, संतुष्ट होकर, भोजनादि कार्यक्रमों से आनंदमग्न हुए अपने पति के साथ गाडी में बैठकर आश्रम की ओर चली गई।

दोनों दंपतियों ने अनंत व्रत के आचरण की माहात्म्य से उस पूरे आश्रम स्वर्णमय युक्त, गृह अष्टैश्वर्य युक्त होने का देखकर, संतुष्ट होकर सुख से रहे। शीला गोमेधिका, पुष्यराग, पन्ना, माणिक्यादि, मणिगणखचित भूषण भूषित होकर मेहमानों की सेवा करती थी।

इस प्रकार एक दिन जब दोनों जोडे बैठे थे, क्रूर कौंडिन्य ने शीला के गले में पहने धागे को देखकर ''हे सखी! क्या आपने मुझे वश में करने के लिए या दूसरों को वश में करने के लिए इसे बाँधा?'' ऐसा पूछने पर शीला ने इस प्रकार बताया।

हे प्राण नायक! मैंने अनंतपद्मनाभ स्वामी का व्रत किया है। उस भगवान की कृपा के कारण ही हमारे पास धन-धान्य एवं संपत्तियाँ है। सत्य की व्याख्या करने पर थी कौंडिन्य बहुत क्रोधित होकर उनकी आँखे लाल हो गई। अनंत भगवान को गालियाँ देते हुए, उस धागे को जलती हुई आग में फेंक दिया। तब शीला ने हाहाकर मचाते एवं दौडते हुए, उस धागे को लाकर दूध में डालकर गीला कर दिया। कौंडिन्य के इस अपराध के कारण उस का बहुत नुकसान हुआ। सारी संपदाएँ चली गयी। उल्टा जहाँ भी वह जाता वहाँ झगडा हो जाता है। उस का जीवन नरकप्राय बन गया।

निस्सहाय और दरिद्रता को रोते एक दिन कौंडिन्य ने एक गुफा में प्रवेश किया। उसी समय वह भूख से भी पीडित था। भगवान अनंत पद्मनाभ स्वामी का स्मरण आने के बाद, उस महादेव को किस तरह दर्शन करना चाहिए। ऐसा अपने मन में ध्यान करते हुए एक आम वृक्ष के पास वह गया। वहाँ कौंडिन्य ने कई फूलों और फलों के साथ रहा एक बड़ा आम के पेड को देखा और उस पेड पर एक भी पक्षी को न देखकर आश्चर्यचकित हो गया। बाद में उस पेड से इस प्रकार कहा- ''हे वृक्षराज! क्या आपने अनंत नाम के देवता को देखा है? उसने जवाब दिया था कि- ''मुझे मालूम नही है।''

उसके बाद कौंडिन्य ने थोड़ा आगे जाकर हरी घास में बछडे के साथ इधर-उधर घूमने वाली एक गाय को देखकर पूछा- ''हे कामधेनु! आपने अनंत नाम के देवता को देखा है? तब उसने कहा कि- मुझे मालूम नहीं है।''

उसके बाद कौंडिन्य ने थोड़ा आगे जाकर देखा कि एक बैल अपने घुटनों पर खडा है। तब उससे पूछा था कि ''हे वृषभराज! आपने अनंत पद्मनाभ को देखा, ऐसा पूछने पर उसने कहा कि- मुझे नहीं पता कि अनंत पद्मनाभ स्वामी कौन है?''

उसके बाद थोड़ा और आगे जाने के बाद कमलाकरों को देखा, ''हे कमलाकर! क्या आपने अनंत पद्मनाभ स्वामी को देखा है? तो पुष्करिणियों ने कहा कि- हमें मालूम नहीं है। कौंडिन्य थोडा आगे जाकर देखा तो वहाँ एक गधा एवं हाथी खडे हुए है। उनको देखकर पूछा कि क्या आपने अनंत पद्मनाभ स्वामी को देखा है? उन्होंने कहा कि हम नहीं जानते है कि अनंत पद्मनाभ स्वामी कौन है।''

ऐसी पूछ-ताछ करने के बाद कौंडिन्य बहुत दु:खित होकर बेहोश हो गया। तब भगवान श्रीकृष्ण कौंडिन्य के पास आए। जो एक वृद्ध ब्राह्मण के रूप में थे। हे विप्रोत्तम! आप यहाँ आए! श्रीकृष्ण कौंडिन्य को अपने घर ले गये। वहाँ वह गृह नवरत्न मणिगण की सुन्दरता और देवताओं की उपस्थिति को देखकर आश्चर्यचकित हो गया, सदा गरुड सेवित, शंख-चक्रधार के रूप में रहे श्री पद्मनाभस्वामी ने अपना रूप दिखाया, कौंडिन्य भगवान का निज रूप देखकर संतोष सागर में डूब गया। भगवान का अनेक पद्धतियों में स्तोत्र किया। अनंत पद्मनाभ स्वामी ने बहुत खुश होकर ऐसा कहा कि- 'हे विप्रोत्तम! तुम ने जो स्तोत्र किया है, उससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। तुझे कभी दरिद्रता न हो, अंत्य काल में विष्णु लोक प्राप्त हो।' कौंडिन्य ने आनंदादि लोक में डूबते हुए इस प्रकार कहा-

''हे जगन्नाथ! रास्ते में मैंने आम्रवृक्ष को देखा। क्या है उस पेड की कहानी? वह गाय कहाँ है? वह वृषभ कहाँ से आया है? उस पुष्करिणी की विशेषता क्या है? वे गधा, हाथी और ब्राह्मण कौन है?'' कौंडिन्य के ऐसा पूछने पर भगवान श्रीकृष्ण ने इस प्रकार कहा-

''हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! अतीत में एक ब्राह्मण ने सभी शिक्षाओं का अध्ययन किया और जंगल में एक आम्रवृक्ष के रूप में पैदा हुआ। क्योंकि उसने गर्व से किसी को पढ़ाया नहीं था। एक और महाभाग्यवान होकर भी अपने जीवनकाल में कभी भी ब्राह्मणों को अन्नदान न देने की वजह से पशु का जन्म लेकर घास खाने के लिए घास में घूम रहा है। पहले एक राजा ने वृषभ बनकर वन में घूम रहा था। दो पुष्करिणियाँ हैं। एक धर्म है तो दूसरा अधर्म है जान लीजिए। एक मानव सदा मनुष्यों को दूषित करने के कारण गधे का जन्म लेकर विचरण कर रहा है। भूतपूर्व एक आदमी ने अपने बडों के द्वारा किए हुए दान-धर्मों को अपने खाते में जमा करने की वजह से हाथी के रूप में जन्म लिया। मैं ही अनंतपद्मनाथ के रूप में माने वृद्ध ब्राह्मण के रूप में तुम्हारे सामने उपस्थित हुआ। इसलिए तुम इस अनंत पद्मनाभ व्रत को चौदह साल आचरण करने से, तुम को नक्षत्र स्थान प्राप्त होगा।'' ऐसा बताकर भगवान गायब हो गया।

उसके बाद कौंडिन्य महामुनि ने अपने घर वापस लौटकर पत्नी से घटित पूरी कहानी को बताया। चौदह साल अनंत पद्मनाभ व्रत का आचरण करके इस पृथ्वी पर पुत्र-पौत्र एवं संपत्तियों को प्राप्त किया। जीवन काल के अंत में नक्षत्र मंडल को भी प्राप्त किया।

हे धर्मराजा! वे महात्मा कौंडिन्य नक्षत्र मंडल पर दिखाई दे रहे हैं एवं अगस्त्य मुनि भी इस व्रत का आचरण करके दुनिया में प्रसिद्ध हुए। इन के अतिरिक्त सागर, दिलीप, भरत, हरिश्चन्द्र, जनक महाराज आदि अनेक राजाओं ने भी इस व्रत का आचरण किया। इस आचरण से उन्होंने दुनिया में राज्यों के साथ-साथ समस्त सुखों को प्राप्त किया तथा अंत में स्वर्ग को भी। इसलिए तुम्हारे इस व्रत की कथा को आरंभ से अंत तक सुननेवाले इस संसार में अष्टैश्वर्य को प्राप्त करके उसके बाद उत्तम पद प्राप्त करेंगे। ऐसा सूत महामुनि ने श्रीकृष्ण की कहानी को सुनाया।

''इति श्री अनंत पद्मनाभ स्वामी व्रत कथा संपूर्णम्।''

अलिपिरि - तिरुमल पैदल यात्रा का महत्व

- डॉ.लक्ष्मणाचार्य मरिंगंटि
मोबाइल - 9640233930

‘‘संभवामि युगे युगे।’’-- भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में अर्जुन से कहा था- ‘‘साधु-सज्जनों की रक्षा, दुष्ट-लोक कंटकों का दमन एवं धर्म की स्थापना हेतु मैं प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ।’’

यह तो सर्व विदित है कि स्थितिकार श्री महाविष्णु ने कृतयुग में नृसिंह, त्रेतायुग में श्रीराम, द्वापरयुग में श्रीकृष्ण रूप में अवतार लिया। उसी रूप में वे परमपिता परमात्मा श्री महाविष्णु ही कलियुग में भगवान बालाजी या श्री वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में परमपवित्र ‘तिरुमल’ पर प्रकट हुए हैं।

वैसे हर वर्ष देश-विदेशों से श्रद्धालू बहुत बड़ी संख्या में तिरुपति आते हैं। फिर स्वामी के दर्शन के लिए तिरुपति से कुछ लोग सरकारी वाहनों, कुछ निजी-वाहनों, प्राइवेट गाडियों द्वारा तिरुमल पहाड पर पहुँचते हैं। तो बहुत भक्त अत्यंत भक्तिभाव से, श्रमसाध्य होने पर भी, तिरुमल पहाड पर पैदल जाते हैं। क्या बूढ़े, क्या जवान, क्या महिलाएँ और क्या बालक... सभी बड़े उत्साह से, बड़ी श्रद्धा से हजारों सीढ़ियों पर चढ़कर, तीन-चार घंटों में ही अपनी यात्रा तय करके पवित्र

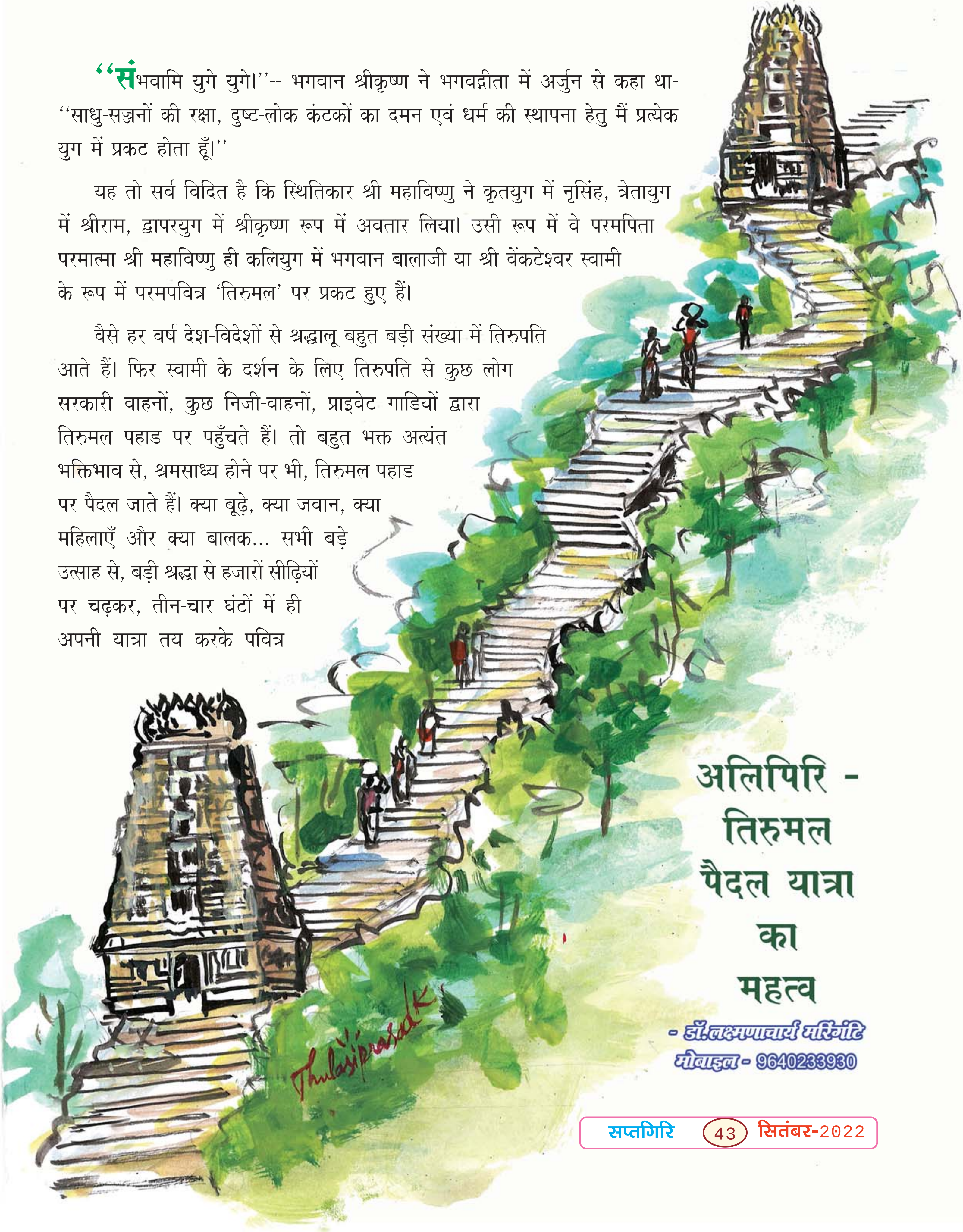

तिरुमल में पदार्पण करते हैं। वैसे दूर से देखकर ही भक्त भाव विभोर हो जाते है। फिर तिरुमल पहुँचकर अपना श्रम, अपनी थकावट, सबकुछ भूल जाते हैं। उस समय प्राप्त होनेवाला दिव्य आनंद अवर्णनीय है।

जहाँ तक 'अलिपिरि' का महत्व है, श्री स्वामी के श्रीचरणों में तिरुमल पहाड के आरंभ में एक अत्यंत पवित्र स्थान है जो 'कपिलतीर्थम्' की पश्चिम दिशा की ओर स्थित है।

जो भी तिरुमल जाते हैं - चाहे वे गाडी से हो या पैदल-सबसे पहले 'अलिपिरि' से होकर ही जाना पडता है। वैसे तिरुमल जाने के लिये ''श्रीवारि (भगवान) मेट्टु'' जैसे एक दो अन्य निकटतम मार्ग भी हैं। उन मार्गों से भी श्रद्धालू तिरुमल पहुँचते हैं। परन्तु 'अलिपिरि' द्वारा तिरुमल जाने वाले भक्तों की संख्या ही अत्यधिक है। अलिपिरि की प्रारंभ स्थान में 'पादाल मंडप' भी है।

अलिपिरि : अलिपिरि को ''अलिपिरि मेट्टु (सीढ़ी) पथ'' (पैदल मार्ग) कहते हैं जो तिरुपति बस डिपो एवं रेल्वे स्टेशन से चार (04) कि.मी. दूरी पर है। तिरुमल ले जाने वाले दो मार्गों में यह एक है। यह एक लंबा रास्ता है जिस में 3540 से भी अधिक सीढ़ियाँ हैं। जब कि श्रीवारि (भगवान) मेट्टू (सीढ़ी) मार्ग में 2388 सीढ़ियाँ (Steps) हैं।

अडिवरम् - अडिपुलि - अलिपुरि यह तिरुमल पर्वत (तमिल भाषा में ''मलै'' का अर्थ है - पर्वत जो तेलुगु में 'मला' बना है।) के मूल में है। जिसे तमिल भाषी 'अडिवरम' कहते हैं। सनातन या परम्परावादी लोग इसे 'अडिपदि' (प्रथमचरण-First Steps) कहते हैं। परन्तु इस समय तो यह शब्द 'अलिपिरि' बन गया। (भाषा विज्ञान के 'मुख-सुख' वाला सिद्धान्त इस पर लागू होता है।)

अलिपिरि शब्द के पीछे एक कथा भी है। यहाँ पर एक बृहद इमली वृक्ष है जो शेषनाग का प्रतीक है।

श्रीवैष्णव सम्प्रदाय में इसे तिंत्रिणी वृक्ष कहा जाता है। इस वृक्ष का सम्बंध श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के द्वादश (बारह) आल्वार सन्तों में से नम्माल्वार (शठकोप) से है। यह भी कहा जाता है कि नम्माल्वार ने इस वृक्ष के एक बड़े छेद में रहते लोगों को अनेक वर्षों तक दर्शन दिए थे। ''अडिवरम'' में ''पुळि'' या ''पुलि'' के रहने से यही ''अडिपुलि'' कालक्रम में ''अलिपिरि'' बन गया। अब हम संक्षेप में तिरुमल पाद-यात्रा ''पैदल यात्रा''- का महत्व जान लेंगे। अलिपिरि से तिरुमल तक पैदल जाना एक अद्भुत व अविस्मरणीय यात्रा है। प्रथम रास्ते में ''गालिगोपुरम'' - 'मंदिर टावर'- दिखायी देता है जो एक खाली गोपुर है। वर्तमान में यहाँ न कोई मंदिर है या न ही मूर्ति। कुछ लोगों का कहना है कि यहाँ हमेशा तेज हवा के झोंके रहते है एवं कभी कोई देवता की मूर्ति थी।

'मोकाल्ल मेट्टु' तिरुमल जाने के मार्ग में रहनेवाला एक पर्वतीय प्रांत है जहाँ की सीढ़ियाँ एक दम दुरारोह / ढ़लवाँ (स्टीप) रहती हैं। 'मोकाल्लु' मतलब तेलुगु में 'घुटने' हैं। यहाँ यात्री को अपने घुटनों को पकड़ कर पर्वत पर चढ़ना पड़ता है। शायद इसीलिये इसे 'मोकाल्ल पर्वत' - 'घुटने पर्वत' कहा जाता है। पैदल यात्रा में यात्री को दिव्य अनुभव प्राप्त होता है। रास्ते में कुछ छोटे-छोटे मंदिर, विराट गरुड (अलिपिरि) व हनुमान की मूर्तियाँ, विभिन्न प्रकार के अनेकानेक वृक्ष, तराइयाँ चट्टानें, हिरनें, वराह, सिंगा, मोर, बंदर, विविध पक्षी इत्यादि दिखायी पडते हैं। महान गरुड़ नासिका, श्री वेंकटेश भगवान की मूर्ति इत्यादि भी दिखायी देते हैं। यहाँ का नैसर्गिक सौंदर्य देखते ही बनता है। थोड़े शब्दों में कहें तो प्रकृति की गोद में बसा हुआ यह पावन क्षेत्र अत्यन्त महिमापूर्ण स्थान है। यहाँ की प्राकृतिक सुषमा, गहरी तराइयाँ, ऊँचे-ऊँचे पर्वत, चारों ओर फैली-हुई हरियाली-देखते हुए लगता है कि यहाँ भगवान प्रकृति के रूप में ही विराजमान है। प्रकृति माने मौन भाषा में हमें एक ओर परमात्मा की महानता व्यक्त करती है वहाँ हमारी अकिंचनता व निरीहता से भी बोध कराती है।

पैदल तिरुमल-यात्रा करनेवालों को सत्संग भी प्राप्त होता है। अनेक भक्त निम्न लिखित विषयों से भी लाभान्वित होने के लिये पहाड पर चढ़ते हैं - १) आध्यात्मिक अनुभूति, २) भक्तों से ज्ञानार्जन, ३) प्राकृतिक सुषमा का दर्शन, ४) ध्यान करना, ५) सामसुमिरन, ६)स्वस्थ्य लाभ, ७) विविध वन्य प्राणियों का दर्शन, ८) मनौतियाँ, ९) प्राचीन मूर्तिकला का दर्शन। कहा जाता है कि

भगवद्रामानुज को तिरुमल नंबी नामक महानुभाव व आचार्य ने अलिपिरि पाद-मंडप के निकट ही मिले थे एवं उन्हें प्रातः स्मरणीय व स्वनामधन्य श्री यामुनाचार्यजी से प्राप्त श्रीमद्रामायण के 18 प्रकार के अपूर्व रहस्यार्थों को एक वर्ष तक भगवद्रामानुज को उपदेश दिया था। तिरुमलनंबी भगवद्रामानुज के मामाश्री थे। इमली वृक्ष के नीचे ही यह कार्यक्रम हुआ था। वहीं पर भगवान बालाजी की चरण-मुद्राएँ हैं। रामानुजाचार्य को उपदेश करते समय कभी-कभी उनकी माध्यमिक पूजा छूट जाती थी। इससे वे दुःखी होते थे, इसलिये भगवान श्रीनिवास ने वहाँ अपने दिव्य चरण-मुद्राएँ प्रकट करायी। तभी जाकर भगवद्रामानुज एवं पूज्य तिरुमल नंबी उनकी अर्चना आराधना करते थे। इस समय तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रबंधकों ने अलिपिरि में तथा तिरुमल पैदल जाने के मार्ग में यात्रियों के लिए अनेकानेक सुविधाओं की अच्छी व्यवस्था की है। कुछ भक्त ऐसे भी हैं जो प्रत्येक सीढ़ी की अर्चना-वंदना करते हैं, उन्हें हल्दी-कुंकुम से अलंकृत भी करते हैं।

ॐ नमो नारायणाय।

ब्रहांड अंड-पिंड से उद्भूत है। ब्रह्मांड का सृजन ईश्वर के द्वारा होने पर भी इस सृजन में 'माँ' की भूमिका अनुपम और अप्रतिम है। इस ब्रह्मांड में समस्त प्राणी माँ से ही उद्भूत हैं। सृजन कार्य माँ रूपी अंड और पिंड से ही संभव हो सकता है। वृक्ष-वनस्पतियों से लेकर समस्त जीव-जंतु ब्रह्मांड में इसी रूप में सृजित और पोषित होते हैं। एक प्राणी से दूसरा प्राणी एक पौधे से दूसरा पौधा इसी क्रम में पैदा होते हैं। बीज, अंड और पिंड के द्वारा ही नया सृजन होता है। दूसरे प्राणी और दूसरी वृक्ष-वनस्पतियों के जन्म के लिए जिम्मेदार बीज, अंड, पिंड आदि को ही सभ्यता ने 'माँ' का नाम दिया है। माँ इसलिए ईश्वर का दूसरा रूप समझा गया है। विज्ञान भी इसे स्वीकार करता है कि दो वस्तुओं एवं प्राणियों के योग से तीसरी वस्तु या प्राणी का जन्म होता है। युगलता सृजन का मूलाधार है। विज्ञान ही नहीं हमारे समस्त चैतन्य-ज्ञान भी इसे स्वीकार करता है। ज्ञान के भंडार वेद, उपनिषद्, पुराण, काव्य आदि भी इसे स्वीकार करते हैं। जाति, धर्म, विचार-धाराएँ, देश-विदेश आदि के भेद भी इस से सहमत हैं। ऋषि, मुनि, साधु, संत और समस्त देवी-देवता भी इससे एकमत हैं।

आदि देव, देवाधिदेव जैसे ईश्वर के रूप ही इस के अपवाद हैं। बाकी देवता-गण भी मातृ-गर्भ से विकसित हुए हैं। ऐसी मान्यताएँ, धारणाएँ पुराणेतिहासों से प्राप्त होती हैं। सृजन कर्ता ब्रह्म है तो उन का सृजन भी इसी क्रम में हुआ है। इसलिए मातृ रूप और माँ सृष्टि में और सृजन में सर्वोपरी है। अत्युत्तम है। विश्व के प्रत्येक धर्म में माँ के रूप को यही अत्युत्तम, गौरव और सम्मान प्राप्त हुआ है। क्योंकि मातृ रूप के बिना वृक्ष-वनस्पतियों से लेकर किसी भी प्राणी का सृजन असंभव है। मातृ रूप सिर्फ सृजन का आधार ही नहीं बल्कि वह रूप पोषण का भी आधार है। पंचभूतों में एक पृथ्वी समस्त प्राणियों की पोषिका है। भूमाता ही समस्त प्राणियों का मातृरूप है। इस मातृरूप से फिर अनेकानेक मातृ-बीजों से सृष्टि या सृजन की रचना हुई है।

विश्व का प्रत्येक धर्म इस को स्वीकारता है। अत्यधिक चिंतन और ज्ञान से परिपुष्ट वैष्णव संप्रदाय भी इसे स्वीकारता है। वैष्णव संप्रदाय के केंद्र में श्री महाविष्णु और उन के अवतारी रूप हैं। वैखानस आगम के अनुसार

वकुला माता

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

भगवान श्री महाविष्णु के पांच रूप हैं पर, व्यूह, विभव, अंतर्यामी और अर्चा रूप। 'विभव' रूप के अंतर्गत ही श्री महाविष्णु के अनेक अवतार हुए हैं। वे हैं मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्की। इन अवतारों की एक विशेषता यह भी है कि इन में पहले के चार यानी मत्स्य, कूर्म, वराह और नृसिंह अवतार बिना किसी मातृगर्भ उत्पन्न न होकर सीधे अवतरित हुए हैं। बाकी सारे किसी मातृ गर्भ से पैदा होकर अवतरित हुए हैं। मुख्यतया कृतयुग में अदिति के गर्भ से वामन, त्रेतायुग में माता रेणुका के गर्भ से परशुराम, माता कौशल्या के गर्भ से श्रीराम, द्वापरयुग में माता देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण, कलियुग में माया देवी के गर्भ से बुद्ध पैदा हुए हैं।

कलियुग के देवाधिदेव श्री वेंकटेश्वर स्वामी का अवतार भी इस संदर्भ में अत्यंत विशिष्ट है। इस अवतार का वैशिष्ठ्य यह है कि श्री वेंकटेश्वर स्वामी भी मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह अवतारों की तरह सीधे अवतरित हुए हैं। यह भी विशेषता है कि उन अवतारों में श्री महाविष्णु विशेष संदर्भों में अपने आप प्रकट हुए हैं। जब कि कलियुग में श्री वेंकटेश्वर जो साक्षात श्री महाविष्णु हैं, वैकुंठ से लक्ष्मी की खोज करते सीधे भूलोक में आये और श्री वेंकटेश्वर कहलाये। मत्स्य, कूर्म, वराह और नृसिंह अवतारों की तरह विशेष संदर्भों में वे प्रकट भी नहीं हुए हैं। भारतीय पुराणेतिहासों में और धार्मिक ग्रंथों में जन्म-जन्मांतर और पुनर्जन्म का अत्यंत महत्व है। वैष्णव संप्रदाय में भी इस की बडी मान्यता है। अनेक देवी-देवता अन्यान्य कारणों से बार-बार जन्म लेते रहे हैं। श्री वेंकटेश्वर के जन्म रहस्य के पीछे भी यही पुनर्जन्म परंपरा है।

वकुला माता कौन :

वकुला माता श्री वेंकटेश्वर की माताजी है। घायल और निराश्रित वेंकटेश्वर को अपने आश्रम में स्थान देकर उन की देखभाल करनेवाली मातृ मूर्ति है। ब्रह्मांड और पद्मपुराणों में उनकी जीवनी को लेकर विस्तार वर्णन प्राप्त होता है। असल में श्री महालक्ष्मी को पुनःप्राप्त करने की अभिलाषा से उन की खोज करते हुए वैकुंठ से सीधे भूलोक में आये भगवान श्री वेंकटेश्वर की माता वकुला माता है। किंतु श्री वेंकटेश्वर वकुला गर्भ से पैदा नहीं हुए। बल्कि वे साक्षात श्री महाविष्णु हैं। फिर वकुला कैसे उन की माता हो गयी। इसी में श्री वेंकटेश्वर और वकुला माता का जन्म रहस्य है। वकुला ऐसी सौभाग्यशाली माँ है जो नव मास गर्भ में श्री महाविष्णु को धारण किए बिना उन की माँ बनी है। द्वापरयुग की माता यशोदा को भी ऐसा ही सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस का भी जन्म-जन्मांतरों का संबंध है। कौशल्या, यशोदा और वकुला एक ही स्त्री मूर्ति के बार-बार जन्म के रूप हैं। पुराणेतिहासों से इस का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं कि त्रेतायुग में माता कौशल्या और राजा दशरथ ने पुत्र कामेष्टि यज्ञ के द्वारा भगवान श्री महाविष्णु को पुत्र के रूप में प्राप्त किया। माता कौशल्या नव मास श्री महाविष्णु को अपने गर्भ में पाल कर उन को जन्म दिया। किंतु दशरथ के वचनों के कारण उन्हें वात्सल्य सुख भरपूर प्राप्त नहीं हुआ। श्रीराम पितृ-वचन पालन करने चौदह वर्ष वनवास चले गए। माता कौशल्य की कामना अधूरी रह गयी। उन की इस कामना की पूर्ति द्वापरयुग

में हुई। कौशल्या द्वापरयुग में गोकुल में नंद की पटरानी यशोदा के रूप में पैदा हुई। श्रीकृष्ण को अपने गर्भ से जन्म देने के बिना ही माँ होने का पूरा वात्सल्य सुख चौदह वर्षों तक प्राप्त किया। श्रीराम चौदह वर्ष वनवास के लिए जिम्मेदार कैकेयी द्वापर में देवकी के रूप में पैदा हुई। अपने गर्भ से श्रीकृष्ण के जन्म देने के बावजूद चौदह वर्षों तक वात्सल्य सुख को प्राप्त करने में असमर्थ ही रही। उन के पुत्र श्रीकृष्ण ने यशोदा के यहाँ गोकुल में अपने बाल्य काल को पूरा किया। फिर चौदह वर्ष श्रीकृष्ण से प्राप्त वात्सल्य सुख को भोगनेवाली माता यशोदा श्रीकृष्ण के गोकुल छोडकर मथुरा चले जाने से उन के किसी भी विवाह को देख नहीं पायी। अष्ट पत्नियों के साथ श्रीकृष्ण ने विवाह रचा। फिर भी यशोदा किसी भी विवाह में भाग नहीं ले पायी। पुत्र के विवाह को देखने की उन की कामना अधूरी रह गयी।

द्वापरयुग की माता यशोदा की यह कामना कलियुग में पूरी हो गयी। बल्कि उन की मनोकामना की पूर्ति के लिए ही भगवान श्री महाविष्णु पृथ्वी पर श्री वेंकटेश्वर के रूप में अवतरित होकर उन के आश्रम की खोज करते वहाँ पहुँच गए। वकुला माता के आश्रम में रहते उन्होंने आकाशराज की पुत्री पद्मावती से विवाह किया। यह विवाह माता वकुला के नेतृत्व व निगरानी में ही संपन्न हुआ। इस रूप में यशोदा की मनोकामना की पूर्ति हुई। पुराणेतिहासों से प्राप्त ये सारे प्रसंग वैष्णव संप्रदाय के पुनर्जन्म सिद्धांत को परिपुष्ट करते हैं। कलियुग देव श्री वेंकटेश्वर की माता वकुला के चरित्र को उज्ज्वल बनाते हैं। कौशल्या, यशोदा और वकुला युगांतर में जन्म लेनेवाली एक ही मातृ मूर्ति के रूप हैं।

क्रमशः

सितंबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - 9989376625

मेष - अनावश्यक मतभेद, पारिवारिक उलक्षण, अपव्यय, रोजी-रोजगार में असंतोष, यात्रा कष्ट, अपनों से धोखाधडी, नाते रिश्तेदारों से तनाव बढ़ेगा। खर्च की अधिकता, रोग से भय। चोट-चपेट की सम्भावना है, आय की अपेक्षा व्यय अधिक।

वृष - यह मास आपके लिए विशेष उथल-पुथल का रहेगा। अत्यधिक कार्य व्यस्तता के कारण थकावट। व्यर्थ भ्रमण, मुकदमें आदि में साधारण सफलता प्राप्त होगी। धन-लाभ, स्त्री-पुत्रादि सुख, बौद्धिक विकास एवं शत्रुओं का नाश होगा। नवीन गृह निर्माण का सुयोग है।

मिथुन - शरीर स्वस्थ रहेगा। परिवार में कलह की स्थिति बनी रहेगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य के ऊपर ध्यान रखे। संबंधों में सुधार होगा। किसी शुभ सूचना से स्थिति में सुधार होगा। आमोद प्रमोद में रुचि लेंगे। विरोधी शान्त रहेंगे। परिवार को लेकर कहीं घूमने जा सकते हैं।

कर्कट - रूके कार्यों में प्रगति। कुटुम्बियों का पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा। अपने वाणी के ऊपर नियंत्रण रखे नहीं तो कार्यों में व्यवधान पैदा होंगे, अल्प लाभ योग है। अपने पारिवारिक सदस्यों के भविष्य की चिन्ता दौड़ भाग करा सकती है।

सिंह - यह मास विशेष उथल-पृथल का है। अत्यधिक कार्य व्यस्तता से थकावट का अनुभव होगा। भोजन और शयन में असुविधा होगी। सावधान होकर काम काज करे वर्ना धोखाधड़ी हो सकती है। आय से अधिक व्यय होगी। लापरवाही के कारण निराशा और दूसरी परेशानियाँ उठ सकती है।

कन्या - अस्थायी कार्य स्थायी होंगे। पुराने सगे सम्बन्धियों से मुलाकात होगी। अपनों का इष्टमित्रों के सहयोग से कार्य मिलेगा, आपका अपना धैर्य आपको विजयी बनायेगा। व्यापार व्यवसाय में उतार चढ़ाव भय और असमंजस की स्थिति बनी रहेगी।

तुला - यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा। अपनों का सहयोग, परिवार में स्नेह सौहार्द पूर्ण वातावरण बना रहेगा। अपने कार्यों को पूरे लगनशीलता और बुद्धिमत्ता से करे। अच्छा लाभ मिल सकता है। धर्म कार्य में रुचि बढेगी। शेयर सट्टे धन्धों में लाभ। व्यर्थ यात्रों से धनव्यय हानि।

वृश्चिक - आपके केलिए यह मास कष्टदायक रहेगा। काम कार्य में रूकावट, अनावस्यक लोगों का आवागमन, नौकरी-व्यापार में असुविधा। शत्रुओं से सावधान। मानसिक अशांति, पद-प्रतिष्ठा में कमी। पर्यटन योग। गृहस्थ जीवन में अशांति बनी रहेगी।

धनु - भविष्य के प्रति चिंतित रहेंगे। अपने काम कार्य को सतर्कता एवं गुप्त रूप से करे। जमीन-जायदाद के क्षगड़े में न पड़े। कोर्ट कचहरी का चक्कर लगाना पड सकता है। राजनैतिक क्षेत्र या व्यक्तियों के सम्पर्क में रहना लाभदायक हो सकता है।

मकर - परिवार में सुख-शान्ति बनी रहेगी। अच्छे कार्यों का सम्पादन, धन व्यय होगा। सरकारी कार्यों में उथल-पृथल की स्थिति बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन स्नेह सौहार्द पूर्ण बना रहेगा। शत्रुपक्ष पराजित होंगे। छात्रों के लिए मध्यम योग है।

कुम्भ - अपने स्वभाव के कारण अपमान सहना पड सकता है। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखे। व्यापारिक स्थिति ठीक रहेगी। मन में उथल-पृथल होने से मन खिन्न रहेगा और मानसिक तनाव बना रहेगा। संतान एवं पारिवारिक सुख प्राप्त होंगे।

मीन - उच्च लोगों के सम्पर्क से प्रभावशाली कार्य का अवसर प्राप्त होगा। अन्न-वस्त्र-आभूषण का लाभ होगा। शत्रुपक्ष परास्त होंगे। अनावश्यक वाद-विवाद में न पड़े। पुत्र पौत्र का भाग्योदय होगा। मास के मध्य में शारीरिक कष्ट होने की संभावना है।

चित्रकथा

भक्ति का महत्व

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री के.द्वारकनाथ

द्वारका से काफी दूर पर एक गाँव में सुदामा नामक एक ब्राह्मण रहता था। लोग उन्हें 'कुचेल' के नाम से भी पुकारते थे। श्रीकृष्ण का बाल्य मित्र सुदामा गरीब था। उसकी पत्नी वामाक्षी थी। उन्हें बहुत सारी संतान हुई। 1

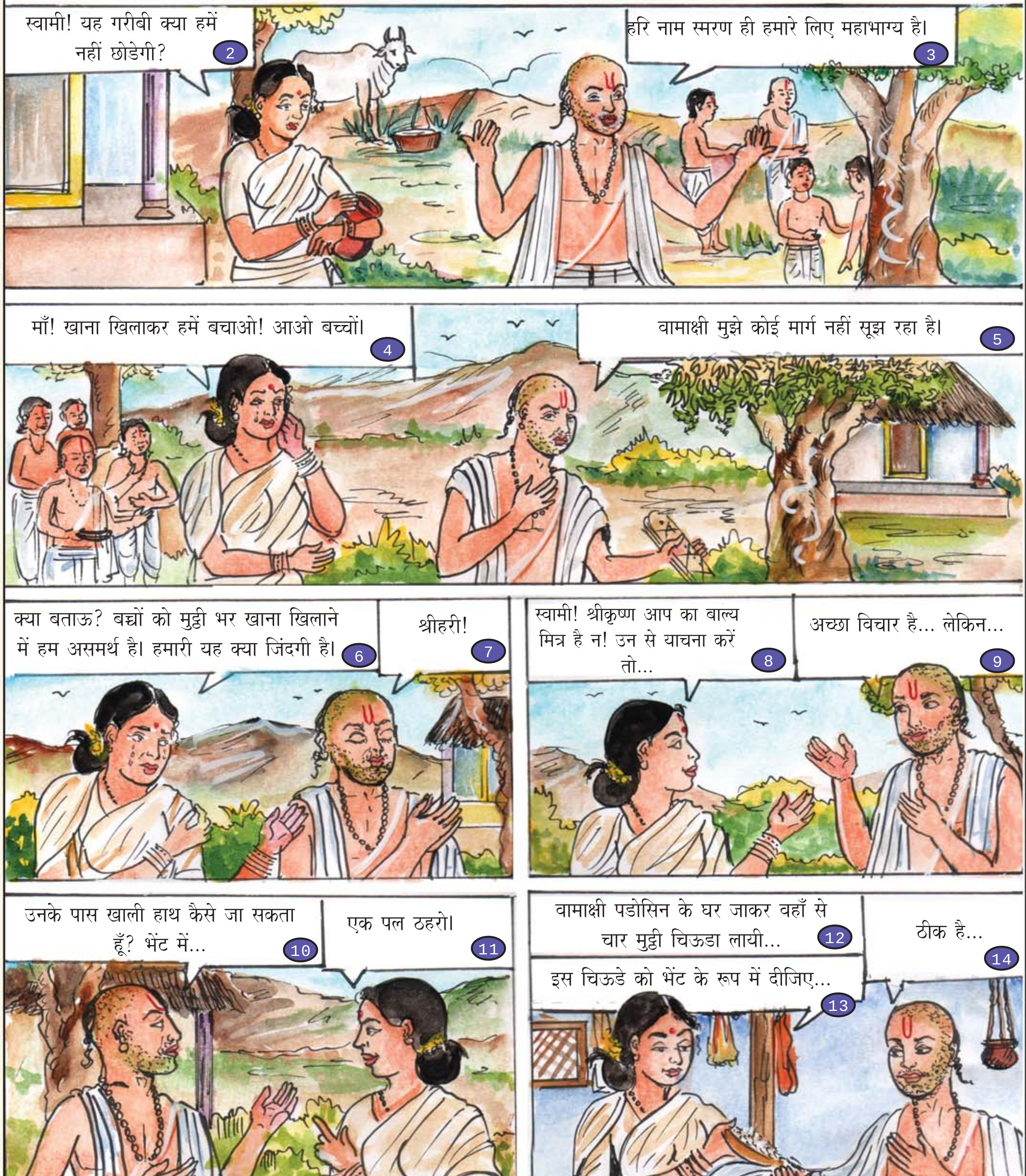

उस चिऊडे को वामाक्षी ने अंगवस्त्र की छोर में बाँधा। सुदामा उसे अपने साथ लेकर द्वारका पहुँच गया। श्रीकृष्ण के भवन के सामने खडे होकर द्वारपालकों से...
15
देखो। श्रीकृष्ण के दर्शनार्थ आया हूँ। मैं उनका मित्र हूँ...
16
तुम्हारी शकल तो ऐसा नहीं... फिर भी श्रीकृष्ण से बोल कर आएंगे...
17
द्वारपालकों ने जाकर श्रीकृष्ण से सुदामा के बारे में बताया। सुदामा का नाम सुनते ही श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ जाकर उनका अतिथि सत्कार किया। जिससे सुदामा बहुत पुलकित हुआ। श्रीकृष्ण ने सुदामा का कुशल-मंगल जान कर...
18
सुदामा! तुम भेंट के रूप में मेरे लिए क्या लाये थे?
19
श्रीकृष्ण मैं कोई बडी भेंट नहीं लाया...
20
मुँह-मुलाजा होनेवाले कुचेल के सारे बदन को टटोल कर, अंगवस्त्र की छोर में बांधी हुई गठरी को खोल कर मुट्ठी भर चिऊडे को मुँह में डालते हुए... श्रीकृष्ण ने कहा,
21
वाह! ये चिऊडे कितने स्वादिष्ट है।
22
दूसरी मुट्ठी भर चिऊडे खाने केलिए तैयार श्रीकृष्ण को रोककर रुक्मिणी ने...
23
देव, देवा! अनंत कोटि संपदा इन्हें देने के लिए अब तक जो चिऊडे खाये वे काफी हैं। और मत खाओ।
24
उस दिन सुदामा ने श्रीकृष्ण के पास महा भोज खाने के बाद कहा...
25
मेरा जन्म चरितार्थ हुआ श्रीकृष्ण!
26
श्रीकृष्ण ने अपने मित्र रूपी भक्त को अनंत कोटि संपदाओं से अनुग्रहित किया।
27
भगवान श्रीकृष्ण ही इस कलियुग में श्री बालाजी के रूप में आविर्भाव होकर हमारे सभी मनोकामनाओं को सुदामा के जैसा पूरा कर रही हैं।
28
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र का जिराक्स प्रति मान्य नहीं है। 'ओरिजनल' रूप में ही मूल पृष्ठ मात्र ही भेजना चाहिए।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र पहुँचाने की अंतिम तिथि 25-9-2022 है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
आयु............, चंदा नंबर............................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-2

1) ब्रह्मोत्सव मनाने के लिए ब्रह्म, इंद्रादि देवता कौन से भगवान जी का अनुमति माँगी?
ज) ....
2) श्री महाविष्णु का द्वापरयुग की माता कौन है?
ज) ....
3) कितने सालों तक कम से कम अनंत पद्मनाभस्वामी का व्रत करना चाहिए?
ज) ....
4) भगवान श्री वेंकटेश्वर के ससुर कौन हैं?
ज) ....
5) ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिन कौन-से भगवान के साथ भक्त भी पुष्करिणी में डुबकी लगाते पाप मुक्त होते हैं?
ज) ....
6) श्रीकृष्ण भगवान के लिए भेंट के रूप में सुदामा ने क्या दिया है?
ज) ....
7) श्री महालक्ष्मी को पुनःप्राप्त करने के लिए श्री वेंकटेश्वर भगवान वैकुंठ को छोड कर सीधे कौन-से लोक पर पधारे हैं?
ज) ....
8) आकाश राज की पुत्री का नाम क्या है?
ज) ....
9) श्रीरामचंद्र प्रभु कितने सालों तक वनवास किया?
ज) ....
10) वामन भगवान को भिक्षापात्र किस ने प्रदान किया है?
ज) ....
11) तिरुमल पहाड को पैदल मार्ग से जानेवाले रास्ता का नाम क्या है?
ज) ....
12) वकुला माता कौन है?
ज) ....
13) ब्रह्मोत्सव के अवसर पर सातवें दिन रात को भगवान श्री वेंकटेश्वर कौन-से वाहन पर आरूढ़ होते हैं?
ज) ....
14) सुदामा का और एक नाम क्या है?
ज) ....
15) विश्व के प्रत्यक्ष देव कौन हैं?
ज) ....

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

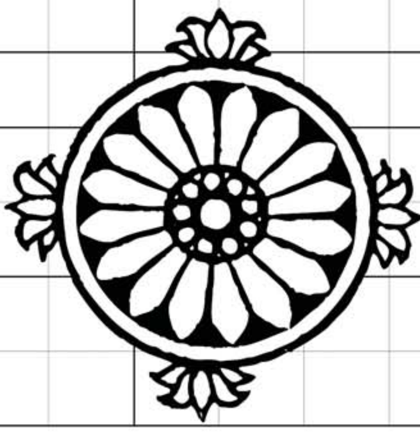

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) कपिलेश्वरस्वामी	अ) स्वामिपुष्करिणी
2) पद्मावती	आ) तुम्बुरु तीर्थ
3) वराहस्वामी	इ) तिरुपति
4) तुंबुरुडु	ई) कपिलतीर्थम्
5) गोविंदराजस्वामी	उ) पंचमीतीर्थ

1) ई 2) उ 3) अ 4) आ 5) इ

माँ सरस्वती का मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
महासरस्वती
देव्यै नमः।

चित्र में अंतर खोजे!

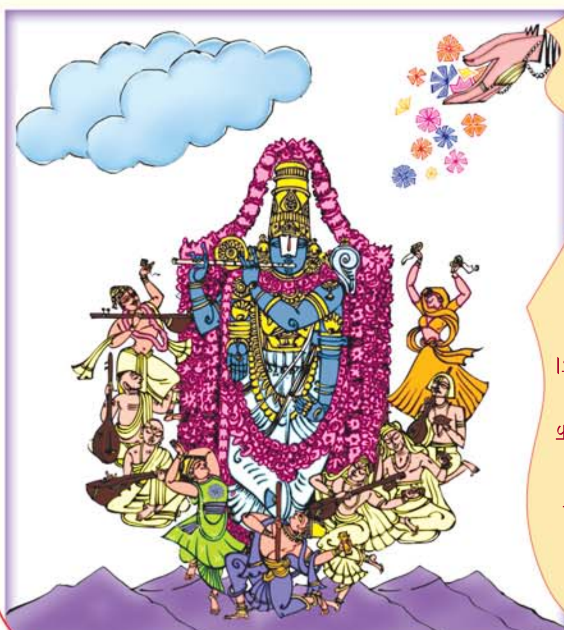

1) बादल।
2) पुष्प।
3) पहाडियाँ।
4) महिला हाथ में संगीत वाद्य यंत्र।
5) हरे रंग की ड्रेस में एक फूल है।
6) वीणा वाद्य यंत्र नहीं है।
7) अन्नमय्या के हाथ में ताड़पत्र नहीं है।

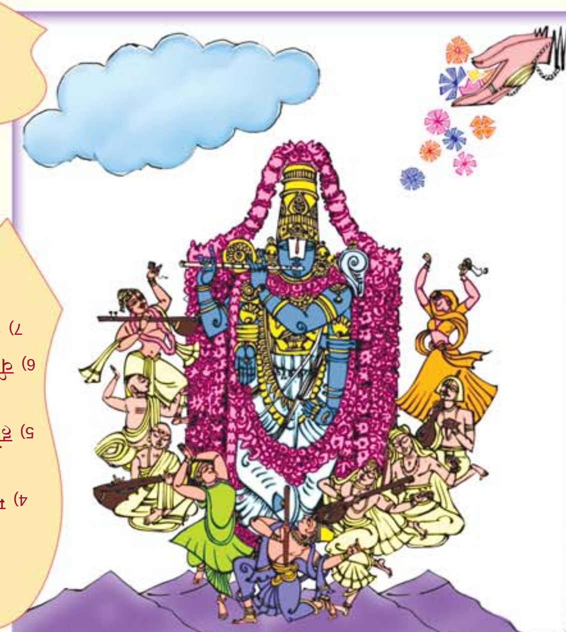

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

....

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code:
0877

दूरभाष :
2264359, 2264563

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 17-07-2022 को तिरुमल मंदिर में "आणिवर आस्थान" के अवसर पर श्रीश्रीश्री पेद्द (बडा) जीयर स्वामीजी ने पवित्र रेशमी वस्त्र को स्वामीजी को समर्पित किये है। इस अवसर पर श्रीश्रीश्री चिन्न (छोटा) जीयर स्वामीजी, ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस., और अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने उपस्थित थे।

दि. 05-08-2022 को श्री "वरलक्ष्मी व्रत" के अवसर पर तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी के मंदिर में अत्यंत वैभवपूर्ण से व्रत को संपन्न किया गया। इस अवसर पर अधिक संख्या में भक्तगण ने भाग लेकर देवी माँ के आशीष प्राप्त किये।

दि. 01-08-2022 को तिरुमल में ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस., जी ने कोविड-19 के अनंतर "अखंड हरिनाम संकीर्तन" नामक कार्यक्रम को दीप प्रज्वलन करके पुन:प्रारंभ करने वाले दृश्य।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-08-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.